सम्पादकीय
शान्तिकुञ्ज में होती है देवात्मा हिमालय की दिव्यता की अनुभूति 2

विशिष्ट श्रद्धाञ्जलि
एक संग्रहणीय धरोहर 'शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती डाक टिकट' से करें देश-विदेश में युगचेतना का विस्तार 3

वृक्षारोपण
युगसृजेताओं का अरमान, हराभरा हो अपना जहान 4

राष्ट्रीय तरुरोपण महायज्ञ
180 स्थानों पर शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन की स्थापना 7 एवं 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 सितम्बर 2021
वर्ष : 34, अंक : 06
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 सितम्बर 2021
वार्षिक चंदा : .... ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-
प्रति अंक : ....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

सच्ची प्रगति, समृद्धि एवं आनन्द का आधार

परिष्कृत व्यक्तित्व

भौतिक सुविधाओं में वह शक्ति नहीं है कि व्यक्ति को श्रेष्ठ बना दे, पर अच्छे व्यक्तित्व में यह गुण मौजूद है कि वह सम्पन्नता का उपार्जन कर ले। हम इस तथ्य को जब तक न समझेंगे, तब तक दौलत के पीछे भागते रहेंगे। आदर्शवाद की उपेक्षा करके सम्पन्नता के लिए घुड़दौड़ लगाने का परिणाम लाभ के स्थान पर हानिकारक ही सिद्ध हो सकता है।

नर-रत्नों का भण्डागार

मानव प्राणी यदि अपने कर्त्तव्य-धर्म का ठीक प्रकार पालन करें तो ईश्वर का अविनाशी राजकुमार एवं सृष्टि का मुकुटमणि ही माना जायगा, क्योंकि उसके अन्दर की महानता जब प्रकट, प्रस्फुटित एवं परिपुष्ट होती है तो वह महामानव, देवता एवं परमात्मा के रूप में दृष्टिगोचर होने लगता है। देवत्व हर व्यक्ति के अन्दर पर्याप्त मात्रा में भरा पड़ा है। यदि वह चाहे तो आसानी से उसे जगा सकता है और जिसके अन्दर का सोया देवत्व जगा, उसका बाह्य जीवन सब प्रकार उज्ज्वल बनना सर्वथा स्वाभाविक है।

भौतिक सुख-शान्ति, समृद्धि एवं सम्पत्ति मानवीय व्यक्तित्व की अनुगामिनी रही है, रहती है। गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से जो व्यक्ति पूर्णता के निकट पहुँचता जायगा, वह कभी अभावग्रस्त न रहेगा। कोई स्वेच्छा से त्याग करे, वह बात दूसरी है, पर सद्गुणी व्यक्ति प्रकृति की ओर से कभी अभावग्रस्त या दीन-दरिद्र नहीं रखा जाता। पुरुषार्थी, उद्योगी, दृढ़ चरित्र कर्मयोगी के लिए पर्वत रास्ता देते हैं और बादल उन पर छाया करते हैं। अभावग्रस्त और दीन-दरिद्र तो उन्हें रहना पड़ता है, जिनका व्यक्तित्व दोषपूर्ण है। जिनके गुण, कर्म, स्वभाव का स्तर मानवता के मापदंड तक ऊँचा उठा हुआ है, उनके लिए इस संसार में विपत्तियों का नहीं, सम्पदाओं का ही उपहार प्रस्तुत रहता है। प्राचीनकाल में जिस प्रकार हमारा देश नर-रत्नों से भरा पड़ा था, वैसे ही भौतिक ऐश्वर्य की भी कमी न थी। जहाँ सज्जनों का बाहुल्य होगा, वहाँ सुख-शान्ति भी चिरस्थायी रहेगी ही। जहाँ सन्मार्ग का पथ अपनाया हआ है, वहाँ न तो समस्याएँ उपजती हैं न गुत्थियाँ उलझती हैं।।

सम्पत्ति बढ़ायें, विपत्ति नहीं

हमारा स्वप्न यही है कि हममें से हर व्यक्ति मानवता के आदर्शों पर सच्ची आस्था रखने वाला और उस पर निरन्तर आरूढ़ रहने वाला बने। दूसरे लोगों की कल्पना दूसरी तरह की है। वे सोचते हैं धन-दौलत, उद्योग, सम्पत्ति एवं साधन-सुविधाएँ जुटा लेने से मनुष्य का जीवन स्तर ऊँचा उठ जायगा और उसकी समस्याएँ सुलझ जायेंगी। सम्पत्ति की वृद्धि करना अच्छी बात है, सुविधाएँ बढ़ेंगी तो उससे आसानी ही रहेगी, पर यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि भावना और आदर्श की दृष्टि से मनुष्य का आन्तरिक स्तर गिरा रहा तो सम्पत्ति और सुविधा बढ़ने से भी चैन न मिलेगा, वरन् उन्हें पाकर अनीतिवान मनुष्य और भी अधिक दुष्कर्म करने लगेगा और भी अधिक विपत्ति में फँसेगा।

ऐश्वर्य बढ़ना चाहिए, पर साथ ही उत्तरदायित्व को समझने एवं उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करने की विवेकशीलता भी बढ़नी चाहिए।

मनुष्य का आन्तरिक स्तर इसी आधार पर ढाला जाना चाहिए कि वह स्वयं चैन से रहे और दूसरों को चैन से रहने दे। स्वयं प्रगतिशील बने और दूसरों को प्रगति के पथ पर चलने में सहयोग प्रदान करे। अनीति को न तो सहन करे और न किसी को अन्यायपूर्वक सताये। अपना कर्तव्य पालन करे और दूसरों के सामने ऐसा आदर्श प्रस्तुत करे जिससे उन्हें भी श्रेष्ठता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले। धन-संग्रह की तृष्णा, पद, अधिकार, सत्ता एवं अहंकार की पूर्ति में आज जिस प्रकार लोग अपनी उन्नति समझते हैं और मौज-मजा कर लेने को जैसे जीवन की सफलता मानते हैं, वैसे ही यदि जीवन को आदर्श, महान, कर्तव्यरत एवं धर्मपरायण बनाने की हर व्यक्ति को लगन लग जाये तो मनुष्य आदर्श मनुष्य बन सकता है और मानव प्राणी कितना महान् है, इसका प्रतिक्षण अनुभव कर सकता है। सद्भावनाओं में जिन लोगों का मन डूबा रहेगा, उनका शरीर आदर्श कार्य ही करेगा और उन कार्यों से उन व्यक्तियों का निज का कल्याण तो होगा ही साथ ही जो उनके सम्पर्क में आयेंगे, वे भी सन्तोष एवं प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

सुविधा नहीं, श्रेष्ठता ज़रूरी है

आज हम उन्नति तो चाहते हैं, पर मानवीय सद्गुणों के विकास का प्रयत्न नहीं करते। समाज में शान्ति और सम्पन्नता रहे, यह सभी की इच्छा है, पर इसके मूल आधार पारस्परिक प्रेमभाव की वृद्धि का उपाय नहीं करते। भौतिक सुविधाओं में वह शक्ति नहीं है कि व्यक्ति को श्रेष्ठ बना दे, पर अच्छे व्यक्तित्व में यह गुण मौजूद है कि वह सम्पन्नता का उपार्जन कर ले। हम इस तथ्य को जब तक न समझेंगे, तब तक दौलत के पीछे भागते रहेंगे। आदर्शवाद की उपेक्षा करके सम्पन्नता के लिए घुड़दौड़ लगाने का परिणाम लाभ के स्थान पर हानिकारक ही सिद्ध हो सकता है। यह दुनिया अधिक अच्छी, अधिक सुन्दर, अधिक सम्पन्न, अधिक शान्तिपूर्ण बने, यदि हम सब यही चाहते हैं तो फिर इस प्रगति के मूल आधार-व्यक्तित्व की श्रेष्ठता की ओर ध्यान क्यों नहीं दिया जाता, यही आश्चर्य है। प्रगति तभी स्थायी रह सकेगी, सुख-शान्ति में तभी स्थिरता रहेगी, जब मनुष्य अपने को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने का प्रयत्न करे। इस उपेक्षित तथ्य को अनिवार्य आवश्यकता के रूप में जब तक हम स्वीकार न करेंगे और व्यक्तिगत एवं सामूहिक चरित्र को ऊँचा उठाने के लिए कटिबद्ध न होंगे, तब तक अगणित समस्याओं की उलझनों से हमें छुटकारा न मिलेगा।

अपना उद्धार स्वयं करें

आत्मा स्वभावतः पवित्र है, उसमें परमात्मा का प्रचुर अंश विद्यमान रहने के कारण देवत्व की सभी विशेषताएँ और सम्भावनाएँ मौजूद हैं, पर प्रस्तुत वातावरण की मलीनता से प्रभावित होकर वह भी मलीन जैसा बन जाता है। अपनी यह दुर्गति देखना हमें कदापि सहन न होना चाहिए। कोई दूसरा कीचड़ में फँस जाय या नदी-नाली में गिर पड़े तो हमें उस पर दया आती है और उसे निकालने के लिए उदारतापूर्वक प्रत्येक सम्भव सहायता देने का प्रयत्न करते हैं। यह उचित भी है और मानव धर्म के अनुकूल भी। किन्तु आश्चर्य तब होता है जब अपने आपको मलीनता की कीचड़ में कंठ तक धंसे होने पर भी स्वयं निकलने का प्रयत्न नहीं करते और न उसके सम्बन्ध में कुछ सोचते हैं। औरों की सहायता करना पुण्य है, पर अपनी सहायता करना, अपना उद्धार करना, अपना उत्कर्ष करना तो उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। आत्मा का उद्धार करना सबसे बड़ा पुण्य-परमार्थ माना गया है।

सुख की खोज करते-करते मनुष्य दौलत की देहरी पर अपना सिर पटकता रहता है। दौलतमंदी के बाहरी ठाट-बाट को देखकर, भोग-सामग्री को देखकर यह भ्रम होता है कि वस्तुतः यही सुखी है और इनकी स्थिति यदि अपने को प्राप्त हो जाय तो हम भी भरपूर आनंद उठा सकेंगे। पर यह बात अनुभव की कसौटी पर कसे जाने से गलत ही सिद्ध हुई है। दौलत की आवश्यकता उतनी ही मात्रा में है जितने से दैनिक जीवन का साधारण कार्यक्रम पूरा होता रहे, इससे अधिक परिग्रह जिसके पास भी होगा, जहाँ भी होगा, वहाँ नाना प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होंगी और आदर्शवाद के अभाव में वे समस्याएँ ऐसे उलझती रहेंगी कि व्यक्ति अपनी साधारण और स्वाभाविक शान्ति से भी हाथ धो बैठेगा। धन कमाना या संग्रह करना अपने आप में कुछ भी महत्त्व नहीं रखता, महत्त्वपूर्ण तो उसका सदुपयोग ही है। कितने ही व्यक्ति विपुल सम्पदा के स्वामी होते हैं, पर उसका उपयोग नहीं जानते। कंजूस की तरह उसे जोड़ते रहते हैं और अन्त में दूसरों के लूट ले जाने के लिए सब कुछ पड़ा छोड़ जाते हैं। धन से किसी ने यदि कुछ लाभ उठाया है तो उसका श्रेय सदुपयोग करने वाली बुद्धि को ही दिया जायेगा। यह विवेक बुद्धि ही सुख-शान्ति की सच्ची आधारशिला है।

सच्ची प्रगति का एकमात्र उपाय

आत्म-कल्याण के लिए सद्गुणों की, सद्विचारों की, सद्भावनाओं की, सत्कर्मों की अभिवृद्धि होनी चाहिए। जब तक यह प्रगति रुकी है, तब तक प्रगति जैसी लगने वाली तड़क-भड़क एक खोखली विडम्बना मात्र ही रहेगी। मनुष्य का सच्चा धन उसका आत्मिक स्तर ही है। यह स्तर जिसका जितना ऊँचा है, वह उतना ही धनी माना जायेगा। महानता वस्तुओं में नहीं मानवीय गुण, कर्म, स्वभाव में सन्निहित रहती है। हम उत्कर्ष की ओर चढ़ें, उन्नति करें, सुख-साधन बढ़ायें, पर यह भली-भाँति याद रखें कि धन सम्पदा से नहीं, मानवीय सद्गुणों के मूल्य पर ही वह आनन्द और उत्कर्ष प्राप्त हो सकता है जो वास्तविक सुदृढ़ और चिरस्थायी है।

परम पूज्य पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी, वाङ्मय खण्ड 54 'मनुष्य में देवत्व का उदय' पृष्ठ 4.49-50 से संकलित, सम्पादित

शान्तिकुञ्ज में होती है देवात्मा हिमालय की दिव्यता की अनुभूति

जीवन का कायाकल्प करने वाले इस दिव्य प्रवाह से स्वयं जुड़ें, अधिक से अधिक लोगों को जोड़ें

देवात्मा हिमालय और गुरुदेव

परम पूज्य गुरुदेव हिमालय के उस क्षेत्र, जहाँ नन्दनवन-तपोवन, चारों धाम, पाँच प्रयाग, पंच काशी आदि स्थित हैं, को पृथ्वी का स्वर्ग और 'अध्यात्म का ध्रुव केन्द्र' कहते रहे हैं। यह वह क्षेत्र है जहाँ सनातन काल से ऋषिगण स्थूल या सूक्ष्म रूप में मानव कल्याण के लिए निरन्तर तप कर शक्तियों का अर्जन एवं सुनियोजन करते रहे हैं। थियोसोफिकल सोसायटी की सहसंस्थापक मैडम ब्लावत्स्की ने भी अपनी पुस्तक में लिखा है-दुर्गम हिमालय में 'अदृश्य सिद्ध पुरुषों की पार्लियामेण्ट' है।

मानवता के उज्ज्वल भविष्य के लिए जीवन का क्षण-क्षण तप-साधना में लगा देने वाले युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव का देवात्मा हिमालय के साथ अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है। बचपन से ही हिमालय के प्रति उनकी अगाध आस्था थी। 15 वर्ष की आयु में वसंत पर्व के दिन हिमालयवासी मार्गदर्शक गुरुसत्ता स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी (दादा गुरुदेव) से पूजा कक्ष में प्रकाशपुंज के रूप में उनका साक्षात्कार हुआ। अतः वसंत पर्व को वे अपना आध्यात्मिक जन्मदिन मानते हैं। उन्होंने लिखा है कि उनका तन कहीं भी क्यों न रहा हो, लेकिन मन सदैव अपनी मार्गदर्शक गुरुसत्ता के साथ एकाकार होकर हिमालय में ही वास करता रहा। यह उनकी समर्पण, विसर्जन, विलय की साधना थी, जिसके बल पर आगे चलकर पू.गुरुदेव का व्यक्तित्व भी 'देवात्मा हिमालय' जैसा ही उत्तुंग, विराट, उदार, शीतल एवं अनन्त ऊर्जा सम्पन्न होता चला गया।

परम पूज्य गुरुदेव को दादा गुरुदेव ने दो बार एक-एक वर्ष के लिए और दो बार छः-छः माह के लिए हिमालय बुलाया। इस आमंत्रण के विषय में वे अपनी आत्मकथा 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं-

हमारे मार्गदर्शक सूक्ष्म शरीर से पृथ्वी के स्वर्ग इसी हिमालय क्षेत्र में शताब्दियों से रहते आए हैं। हमारी बैटरी चार्ज करने के लिए वे समय-समय पर बुलाते रहते हैं। जब भी उन्हें नया काम सौंपना हुआ, तब नई शक्ति देने हमें बुलाया गया है और लौटने पर हमें नया शक्ति-भण्डार भरकर वापस आने का अनुभव हुआ है।

भगवान श्रीकृष्ण की गीता सुनने के बाद अर्जुन ने कहा था, **"करिष्ये वचनं तव।"** यही वचन परम पूज्य गुरुदेव ने दादा गुरुदेव के साथ जीवनभर निभाया। परिणामस्वरूप उनका व्यक्तित्व महान से महानतम और ऋद्धि-सिद्धियों से परिपूर्ण होता चला गया। वे साक्षात् शिवस्वरूप हो गए। जिनका व्यक्तित्व स्वयं वेद-पुराण और गीता की व्याख्या है, जिनके दिए सूत्र-सिद्धान्त निर्विवाद हैं और मानवमात्र के लिए कल्याणकारी है, जिनका युग परिवर्तन जैसा महान संकल्प है, जिनके व्यक्तित्व में आकाश जैसी आत्मीयता, विचारों में सागर जैसी गहराई, धरती जैसी सहनशीलता और ऊर्वरता, सरिताओं जैसी उदारता, चन्द्रमा जैसी शीतलता है वह परम पूज्य गुरुदेव-परम वन्दनीया माताजी साक्षात् शिव-पार्वती नहीं तो और क्या हैं? पूज्य गुरुदेव ने अपने हर कार्य से जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया है। वे निर्विवाद रहे, निष्कलंक रहे हैं। यह महान व्यक्तित्व अध्यात्म जगत का हिमालय, सर्वोच्च शिखर, निष्कलंक प्रज्ञावतार ही तो है।

शान्तिकुञ्ज की स्थापना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष

हमारे मार्गदर्शक को जब भी नया काम सौंपना हुआ, तब नई शक्ति देने हमें हिमालय क्षेत्र में बुलाया गया है और लौटने पर हमें नया शक्ति-भण्डार भरकर वापस आने का अनुभव हुआ है। शान्तिकुञ्ज ऋषियों का, देवात्मा हिमालय का प्रतिनिधित्व करता है। हम भी प्रज्ञापुत्रों को, जाग्रत् आत्माओं को युग परिवर्तन में रीछ-वानरों की, ग्वाल-बालों की भूमिका निभाने की क्षमता अर्जित करने के लिए, शिक्षण पाने या साधना करने के निमित्त बहुधा शान्तिकुञ्ज बुलाते रहते हैं। - परम पूज्य गुरुदेव

शान्तिकुञ्ज और हिमालय

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने साहित्य में लिखा है कि युग परिवर्तन की वर्तमान वेला में मानवता का भाग्य और भविष्य नए सिरे से लिखा जा रहा है। संसार में छाई अवांछनीयताओं को निरस्त करने और असुरता को ध्वस्त करने के लिए हर व्यक्ति के देवत्व को जगाने की आवश्यकता आ पड़ी है। हिमालय प्रवास के समय दादा गुरुदेव (स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी) ने परम पूज्य गुरुदेव का सनातनकाल के प्रायः सभी ऋषियों के छाया शरीर से परिचय कराया था। उनकी तरफ से उनकी सुप्त परम्पराओं को पुनर्जीवित करने का निर्देश मिला। इस पुण्य प्रयोजन के लिए हरिद्वार में 'शान्तिकुञ्ज' की स्थापना का निर्देश भी हिमालयवासी ऋषियों की ओर से ही मिला था।

हमारी वसीयत और विरासत में पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-**"शान्तिकुञ्ज देवात्मा हिमालय का प्रतीक-प्रतिनिधि ही है।"** यहाँ आने वाले श्रद्धालु, साधक-शिविरार्थियों को वही पुण्य लाभ प्राप्त होता है जो वे हिमालय में जाकर तप-साधना से प्राप्त कर सकते थे।

व्यक्तित्व परिष्कार की साधना

साधना से सिद्धि की पहली आवश्यकता है-पात्रता का विकास। चाहे कोई भी धर्म, सम्प्रदाय क्यों न हो, कोई भी उपास्य, इष्ट, आराध्य क्यों न हो; अनुदान-वरदान तथा सिद्धियाँ तो साधना से और पात्रता के विकास से ही मिलते हैं। बिना पात्रता के मिले अनुदान का सदुपयोग नहीं हो पाता तथा मिल भी जायें तो वे अहितकारी एवं अनिष्टकारी भी हो सकते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव पात्रता के विकास के लिए देवात्मा हिमालय और वहाँ से निःसृत होने वाले दिव्य प्रवाहों का ध्यान करने, उन्हें जीवन में धारण करने की साधना के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करते रहे हैं। हर व्यक्ति के लिए प्रत्यक्ष हिमालय जाना और गुफा-कंदराओं में रहकर तप करना न तो सरल है, न संभव। हरिद्वार में शान्तिकुञ्ज की स्थापना से साधकों के लिए यह साधना सरल और सुविधाजनक हो गई है।

शान्तिकुञ्ज ज्ञानगंगोत्री है। जैसे कभी ऋषि भगीरथ ने अपने शापित पूर्वजों के उद्धार के लिए अपने तपोबल से माँ गंगा को स्वर्ग से धरती पर लानेके लिए सहमत किया था, उसी प्रकार आज थकी-हारी, अनेक समस्याओं से ग्रस्त और त्रस्त मानवता में नवप्राणों का संचार करने के लिए प.पू. गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज की स्थापना की है। यहाँ से वे प्रखर प्रज्ञा और सजल संवेदनायुक्त अपनी लेखनी के माध्यम से ज्ञानगंगा को सारी सृष्टि में प्रवाहित कर रहे हैं। जो भी इस ज्ञानगंगा के गंगाजल का आचमन करता है उसके जीवन में पवित्रता, प्रखरता एवं नवउल्लास का बीजांकुर हो ही जाता है। इस चेतन प्रवाह को आज विश्व के हर व्यक्ति तक पहुँचाने की आवश्यकता है।

शान्तिकुञ्ज की विशेषताएँ

देवात्मा हिमालय मंदिर :

वैसे तो पूरा शान्तिकुञ्ज ही देवात्मा हिमालय का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यहाँ पृथ्वी का स्वर्ग और अध्यात्म का ध्रुव केन्द्र कहे जाने वाले देवात्मा हिमालय का विशाल मंदिर भी है। **यह देवात्मा हिमालय का विश्व में अपनी तरह का एकमात्र प्राण प्रतिष्ठित मंदिर है। इसमें चारों धाम, पाँचों प्रयागों, पाँचों काशियों, पाँचों सरिताओं और पाँचों सरोवरों समेत ऋषियों की तपोभूमि के दर्शन किये जा सकते हैं।** इस मंदिर के समक्ष बैठकर जप-ध्यान करना और वहाँ से आने वाले दिव्य प्रवाह, ऊर्जा-अनुदानों को ग्रहण करने का भाव करना सरल हो जाता है। एक बार मन-मंदिर में यह प्रतिमा प्रतिष्ठित हो जाने पर आगे भी ध्यान साधना सरल हो जाती है।

गंगा की गोद, हिमालय की छाया :

शान्तिकुञ्ज हिमालय का प्रवेश द्वार है। यहीं से हिमालय की पर्वत शृंखलाओं का शुभारंभ होता है। यूँ तो समीप में ही माँ गंगा की धारा प्रवाहमान है, लेकिन सच्चाई यह है कि शान्तिकुञ्ज उस भूमि पर बना है जहाँ गंगा की एक धारा भूगर्भ में आज भी प्रवाहित होती है। यहाँ थोड़ी खुदाई करने पर ही गंगा का जल और गंगा में बहने वाले गोल-गोल पत्थर निकलते हैं। शान्तिकुञ्ज में की गई साधना देवात्मा हिमालय की तरह ही गंगा की गोद और हिमालय की छाया में की गई साधना है।

ऋषियों की तपोभूमि : हजारों वर्षों से हिमालय में तप कर रहे ऋषियों के साथ परम पूज्य गुरुदेव का साक्षात्कार हुआ। उन्हीं के निर्देशानुसार शान्तिकुञ्ज का निर्माण उस पावन भूमि पर हुआ है जो कभी सप्तऋषियों की तपःस्थली हुआ करती थी। जिस स्थान पर शान्तिकुञ्ज है, वह गायत्री के ऋषि विश्वामित्र की तपःस्थली है। यहाँ साधकों को ऋषियों के तप से अनुप्राणित भूमि के सूक्ष्म संस्कारों का लाभ सहज ही मिल जाता है।

परम पूज्य गुरुदेव ने जिन ऋषियों के छाया शरीर के साथ साक्षात्कार किया था, ऐसे 20 से अधिक ऋषियों की सुप्त पड़ी परम्परा के पुनर्जीवन के लिए शान्तिकुञ्ज की स्थापना हुई है। परम पूज्य गुरुदेव के आह्वान पर वे ऋषिगण एक अंश से शान्तिकुञ्ज में प्रत्यक्ष रूप से विराजमान हैं। उनमें से सात ऋषियों के प्राण-प्रतिष्ठित मंदिर भी यहाँ बनाये गए हैं।

हिमालय जैसी शीतलता :

शान्तिकुञ्ज आने वाले साधकों का प्रत्यक्ष अनुभव है कि यहाँ प्रवेश करते ही उन्हें एक अलौकिक दिव्यता और शान्ति की अनुभूति होने लगती है। सांसारिक सुविधाओं के अभाव में तपस्वी जीवन जीते हुए भी साधकों को जो सुख एवं आनन्द का अनुभव यहाँ होता है, वह अन्यत्र नहीं होता। यह करोड़ों गायत्री साधकों का अपना घर है। यहाँ आकर वे अपनी थकान, जीवन के तनाव और समस्याओं से दूर आनन्दमय जीवन जीते दिखाई देते हैं। जो परम पूज्य गुरुदेव और परम वन्दनीया माताजी से एक बार मिले हैं वे यही कहते हैं कि इतना प्यार तो उन्हें अपने परिवारी स्वजनों से भी नहीं मिला। अब वैसी ही स्नेह वर्षा श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी कर रहे हैं।

आदर्शों का उत्तुंग शिखर :

शिष्य-साधक देवात्मा हिमालय की दिव्यता का वर्णन पढ़-सुनकर परम पूज्य गुरुदेव से स्वयं भी हिमालय जाकर साधना करने की बात कहते रहे हैं। परम पूज्य गुरुदेव ने उनसे एक ही बात कही, *"बेटे! चढ़ना है तो जीवन के आदर्शों के हिमालय पर चढ़ो, अपनी पात्रता विकसित करो।"* आदर्शों के जिस हिमालय पर चढ़ने की प्रेरणा वे देते रहे, वह शान्तिकुञ्ज के दैनंदिन जीवन में प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं। 'सादा जीवन-उच्च विचार', 'सुख बाँटो-दुःख बँटाओ', 'मानव मात्र एक समान, एक पिता की सब संतान' जैसे अनेक सूत्र हैं जो मानवधर्म की बुनियाद कहे जा सकते हैं, वे यहाँ प्रत्यक्ष चरितार्थ होते हैं। एक विश्व परिवार कैसा होता है? यह देखना है तो उसका एक छोटा प्रारूप शान्तिकुञ्ज में देखा जा सकता है।

ज्ञानगंगा का अविरल प्रवाह : शान्तिकुञ्ज से ज्ञानगंगा का अविरल प्रवाह निरन्तर होता रहता है। युगऋषि के बताए एक-एक सूत्र ने, एक-एक वाक्य ने लोगों को शैतान से संत, दस्यु से देव बना दिया है। ऐसे उदाहरण समाज में हज़ारों की संख्या में मिल सकते हैं। **जिन्होंने भी इस ज्ञानगंगा में डुबकी लगाई उन्हें अपने जीवन की समस्याओं का समाधान मिला ही है।**

आत्मोत्थान मानव की सहज प्रकृति है। हर व्यक्ति अपना उत्कर्ष चाहता है। अच्छे व्यक्तियों में उनका समावेश हो, जीवन सुख-शान्ति से भरापूरा और आनन्दमय हो, ऐसी कामना हर व्यक्ति की होती है। चाह तो हर व्यक्ति की होती है, लेकिन ऐसा सुयोग विरलों को ही मिल पाता है कि वे सही दिशा में कदम बढ़ाकर अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति कर सकें। युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज का आह्वान है कि देवात्मा हिमालय के इस दिव्य प्रवाह से जुड़ें और युगऋषि प्रणीत सूत्रों को अपनाकर अपने जीवन को श्रेष्ठतर बनाएँ, युगधर्म निभायें।

शान्तिकुञ्ज ने बाढ़ पीड़ितों के लिए भेजी एक ट्रक राहत सामग्री

गायत्री शक्तिपीठ कोटा ने सेवा-सहयोग में अग्रणी भूमिका निभाई
कोटा और श्योपुर जिलों के 500 ग्रामीण परिवारों तक पहुँचाई

शान्तिकुञ्ज से राहत सामग्री की रवानगी

इस वर्ष कोटा (राजस्थान) और समीपवर्ती श्योपुर (मध्य प्रदेश) जिलों में 4 अगस्त को अचानक ऐसी भीषण बाढ़ आई थी, जिसकी वहाँ के लोगों ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। सैकड़ों किलोमीटर के क्षेत्र ने सागर जैसा रूप धारण कर लिया। घरों की एक मंजिल पानी में डूब गई। घर, दुकान, गोदाम, फसल, पशु कुछ भी तो नहीं बचा। लोग अपना कीमती सामान भी नहीं बचा सके। जब पानी उतरा, लोग लौटे तो उनके तन पर पहने कपड़े और आँखों में अश्रुधारा ही शेष थी।

संकट की घड़ी में शान्तिकुञ्ज ने अविलम्ब सक्रियता अपनाई। आदरणीया शैल जीजी एवं आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गायत्री शक्तिपीठ कोटा पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री विष्णु मित्तल से सम्पर्क कर परिस्थितियों की जानकारी ली। तद्नुसार व्यवस्थातंत्र सक्रिय हुआ और बाढ़ पीड़ितों के लिए एक ट्रक राहत सामग्री रवाना की गई।

बेस कैम्प- गायत्री शक्तिपीठ कोटा

गायत्री शक्तिपीठ कोटा को बाढ़ राहत कार्यों का बेस कैम्प बनाया गया। सर्वश्री जी. डी. पटेल-व्यवस्थापक, चतुर्भुज जोशी, रामकिशन सुमन, हेमराज पांचाल, हरीश शर्मा, तरुण अरोरा आदि के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्त्ता, बहिनें और युवा मण्डल के सदस्य सेवाकार्यों में जुटे। सर्वाधिक बाढ़ प्रभावित कोटा जिले के पीपल्दा कलॉं, इटावा, सुल्तानपुर व सांगोद क्षेत्र तथा मध्य प्रदेश के श्योपुर, बड़ौदा क्षेत्र का सर्वे कर सर्वाधिक ज़रूरतमंद 500 परिवारों का चयन किया गया।

शक्तिपीठ पर शान्तिकुञ्ज से भेजे गए कम्बल, तिरपाल, दरियाँ, वस्त्र, बर्तन, राशन के किट तैयार करना एक बड़ा काम था, लेकिन 5 वर्ष से 78 वर्ष तक के युगसेनानी सेवाकार्यों में जुटे तो काम आसान होता गया। कई टोलियों के माध्यम से राहत सामग्री को अविलम्ब लोगों तक पहुँचाया गया।

गायत्री परिवार की टोली जहाँ भी पहुँची वहाँ लोगों की आँखों में अपार वेदना के आँसू थे। यह राहत सामग्री पाकर उनकी आँखों में आशा की चमक देखी गई। गायत्री परिवार के परिजनों को भी पीड़ितों को सांत्वना देना, उनके आँसू पोंछना साक्षात ईश्वर की उपासना से कहीं भी कम सुखदाई नहीं प्रतीत हुआ। सेवाकार्यों में हाड़ौती क्षेत्र कोटा, बाराँ और म.प्र. के श्योपुर जिले के 5 से 78 वर्ष तक के सैकड़ों कार्यकर्त्ता प्राणप्रण से जुटे थे।

गायत्री परिवार की सेवाएँ

- भोजनालय चलाया, ताजा भोजन कराया।
- बीमारों को चिकित्सा सेवा और दवाइयाँ दीं।
- शान्तिकुञ्ज से गई सामग्री के किट बनाए और कई गाँवों में बाँटे।
- 500 परिवारों को कम्बल, तिरपाल, दरियाँ, बर्तन, वस्त्र और सूखा राशन दिया गया।
- गायत्री शक्तिपीठ कोटा ने बाँटी 10-12 लाख रुपयों की राहत सामग्री।

राहत सामग्री के किट बनाना और ज़रूरतमंदों में वितरण करना

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में

एक विशिष्ट श्रद्धाञ्जलि

देश-विदेश में छा जाये युगतीर्थ का दिव्य स्मारक

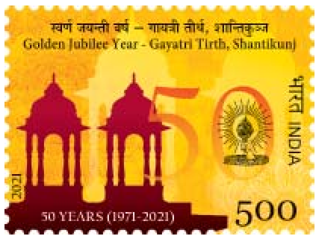

भारत सरकार ने शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर विशेष डाक टिकट जारी किया है। यह अखिल विश्व गायत्री परिवार के लिए विशेष गौरव की बात है, क्योंकि किसी एक संस्था के लिए दो बार डाक टिकट जारी करने का सम्मान अभी तक केवल गायत्री परिवार को ही मिला है। विदित हो कि परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद सन् 1991 में भी भारत सरकार द्वारा युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव की स्मृति में तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा विशेष डाक टिकट जारी किया गया था।

परिजनों-प्रज्ञापुत्रों का दायित्व

क्या करें :- शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष की स्मृति में डाक टिकट का विमोचन युग चेतना विस्तार की दृष्टि से एक स्वर्णिम अवसर है। परिजन इसके माध्यम से देश-विदेश में हर व्यक्ति का ध्यान युगऋषि की ओर आकर्षित कर सकते हैं।

- हम कम से कम इस वर्ष केवल इस विशेष डाक टिकट का ही प्रयोग करें।
- अपने शक्तिपीठ, मण्डल एवं सभी प्रज्ञा संस्थान से जुड़े परिजनों और अन्य लोगों को इसके लिए प्रेरित करें।
- शक्तिपीठ एवं प्रज्ञा संस्थान लोगों की माँग एकत्रित करें और आवश्यकता के अनुसार **शान्तिकुञ्ज से डाक टिकट मँगवा लें।** यहाँ सभी परिजनों के लिए प्रचुर मात्रा में इस विशेष डाक टिकट की व्यवस्था कर ली गई है।
- धनराशि शान्तिकुञ्ज के दान के खाते में जमा सकते हैं। ट्रांस्फर प्रूफ एवं अपनी माँग **व्हॉट्सएप 7817000926** पर भेज दें। इसी व्हॉट्सएप पर संदेश भेजकर बैंक खाता नम्बर भी प्राप्त किए जा सकते हैं।

गायत्री परिवार पुणे ने चलाए बाढ़ राहत कार्य

चिपलून में जीवनावश्यक सामान का वितरण

चिपलून, रत्नागिरी। महाराष्ट्र
जुलाई के अन्तिम दिनों में चिपलून में आई बाढ़ को सभी ने टेलीविजन पर देखा है। लोगों के दो-दो मंजिला मकान भी पानी में डूबे नज़र आए थे। उन दिनों चिपलून निवासी परिजन श्री विजय धारवाडकर पुणे में थे। उन्होंने पुणे शाखा से राहत कार्यों में सक्रिय होने का आह्वान किया। परिणाम स्वरूप गायत्री परिवार पुणे के परिजन एक टैम्पो भरकर राहत सामग्री लेकर चिपलून पहुँचे और सैकड़ों परिवारों को अपना घर-संसार फिर से खड़ा करने में मदद की।

- पुणे शाखा के अग्रणी कार्यकर्त्ता श्री नेतराम जी के अनुसार उनकी शाखा ने स्कूली छात्रों का सहयोग करने की योजना भी बनाई है।
- इन राहत कार्यों से चिपलून में गायत्री परिवार की नई पहचान बनी है। गायत्री परिवार के सेवाभावी स्वरूप को देखकर लोग भावविभोर हो उठे।

जनसंपर्क कमज़ोर पड़ेगा
तो यह मिशन कैसे बढ़ेगा?

सदस्यता का नवीनीकरण कराइये। नए लोगों तक पहुँचाइये।

पाक्षिक
प्रज्ञा अभियान

प्रज्ञा अभियान के माध्यम से मिशन को घर-घर पहुँचाइये

वार्षिक चंदा : ₹60/-(प्रति सदस्य), ₹1500/-(25 सदस्य)

यह शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है। इस वर्ष मिशन के व्यापक विस्तार के लिए सघन जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत 24 लाख नए घरों में देवस्थापनाएँ हुई हैं। उनकी आस्था को पुष्ट करने के लिए निरंतर संपर्क ज़रूरी है।

- प्रज्ञा अभियान के वर्ष में 24 अंक प्रकाशित होते हैं। परिजन एक वर्ष में 24 बार संपर्क के लिए जाएँगे तो नए जुड़े लोगों पर पूज्य गुरुदेव के विचारों और मिशन के कार्यक्रमों का प्रभाव पड़ना सुनिश्चित है। समर्थक को सहयोगी, सहयोगी को कार्यकर्त्ता तक उन्नत करने का यही विधान है।
- प्रज्ञा अभियान का चंदा इतना कम है कि समर्थ परिजन, शक्तिपीठ, शाखाएँ अपनी ओर से लोगों को निःशुल्क वितरित कर सकते हैं। जो जुड़ेंगे, वे आगे सहयोग निश्चित रूप से करेंगे।
- जनसंपर्क बढ़ेगा तो अखण्ड ज्योति एवं पत्रिकाओं के सदस्य बनाना सरल हो जाएगा।
- प्रज्ञा अभियान मिशन का समग्र परिचय देता है। मिशन की गतिविधियों से लोगों को अवगत कराता है। इससे प्रभावित होकर रचनात्मक गतिविधियाँ बढ़ेंगी।

अतः दूरदर्शिता का परिचय दें। हर गाँव-मोहल्ले में कम से कम 25 लोगों तक प्रज्ञा अभियान अवश्य पहुँचायें।
(25 प्रज्ञा अभियान रजिस्टर्ड डाक से भेजे जाते हैं, जिससे मिलना सुनिश्चित हो जाता है।)

अब स्थिति सामान्य है :- कोरोना काल में प्रज्ञा अभियान के प्रकाशन पर असर पड़ा था। कुछ माह के लिए डाक व्यवस्था और कागज़ की उपलब्धता अनियमित हो गई थी। लेकिन अब स्थिति सामान्य है। अतः परिजन अधिक से अधिक संख्या में पाक्षिक मँगायें, घर-घर पहुँचाएँ।

चंदे का नवीनीकरण कराइये :- कोरोना वश हुई अनियमितता के कारण बहुत से ग्राहकों के चंदे का नवीनीकरण नहीं हो पाया है। अपनी सदस्यता की अवधि जानने के लिए संपर्क कीजिए **9258369725** (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)। चंदा जमा करने के लिए बैंक खाते के नम्बर **व्हॉट्सएप 9258369413** पर संदेश प्राप्त किए जा सकते हैं।

बुरहानपुर जिले में स्थापित हो रही हैं मिट्टी के गणेश जी की 8000 मूर्तियाँ

बुरहानपुर। मध्य प्रदेश
पर्यावरण संरक्षण के लिए समर्पित बुरहानपुर शाखा का जनजागरण अभियान रंग ला रहा है। लगभग 250 पहाड़ियों पर सघन वृक्षारोपण कर उन्हें हराभरा कर देने वाले श्री मनोज तिवारी और उनके साथियों ने गणेशोत्सव के समय पीओपी से बनी और ज़हरीले रासायनिक रंगों से रंगी मूर्तियों के विरुद्ध जनचेतना जगाने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। सन् 2009 से उन्होंने यह जनजागरण अभियान आरंभ किया था। उस वर्ष वे केवल 25 परिवारों को ही मिट्टी की मूर्तियाँ स्थापित करने के लिए सहमत कर पाए थे। लेकिन इस वर्ष अकेले बुरहानपुर शहर में 5000 और पूरे जिले में 8000 घरों में मिट्टी की बनी गणेश प्रतिमाएँ ही स्थापित हो रही हैं।

रंग लाया जनजागरण अभियान

शास्त्र सम्मत परम्परा अपनाई

श्री मनोज तिवारी ने बताया कि उन्होंने अपने जनजागरण अभियान में लोगों को सुविधा और सुन्दरता की अपेक्षा शास्त्रों को मानने तथा पर्यावरण का ध्यान रखने के लिए प्रेरित किया है। उनकी मेहनत निरन्तर रंग ला रही है। लोगों में जागरूकता बढ़ रही है। लोग अब मिट्टी तथा विभिन्न धातुओं से बनी मूर्तियों को ही शास्त्र सम्मत मानने लगे हैं और अपने घरों में उन्हीं की स्थापना कर रहे हैं।

प्रतिमा को तराशते श्री नरेन्द्र महाकाल

सिंधीपुरा, बुरहानपुर के श्री नरेन्द्र महाकाल पहले केवल अपने लिए ही मिट्टी की प्रतिमा बनाते थे। गतवर्ष उन्हें 25 परिवारों ने उनसे मूर्ति बनाने की माँग की। इस वर्ष उनका परिवार 50 से अधिक घरों के लिए मिट्टी की मूर्तियाँ बना रहा है।

प्रशिक्षण का प्रभाव

इस प्रचलन को बढ़ाने में गायत्री परिवार के समर्पित प्रयासों तथा स्कूल, कॉलेज, गाँवों में मिट्टी की गणेश प्रतिमाएँ बनाने के लिए दिए जा रहे प्रशिक्षण का भी बहुत बड़ा योगदान है।

वृक्षगंगा अभियान : युगसृजेताओं का अरमान, हराभरा हो अपना जहान

सामाजिक संस्थानों के संग जिले में लगाई 7000 वृक्षों की पौध

अलवर। राजस्थान

गायत्री परिवार अलवर द्वारा अलवर जिले की विभिन्न संस्थाओं और पर्यावरण प्रेमियों के संग मिलकर वृक्षारोपण का प्राणवान अभियान चलाया। शाखा द्वारा आगरा से लगभग 5 से 8 फीट तक विकसित 5000 पौधे आगरा से मँगवाये गए। बरगद, पीपल, नीम, जामुन, आम, कटहल, कदम्ब,ढाक, बिल्व, नीबू आदि प्रजातियों के इन पौधों को उचित स्थान पर रोपने और उनकी सुरक्षा की पूरी-पूरी जिम्मेदारी के संकल्प के साथ विभिन्न संस्थाओं-परिजनों में बाँटा गया। अभियान बहुत लोकप्रिय रहा, परिणाम स्वरूप दूसरी बार भी गायत्री परिवार को 2000 पौधे और मँगाने पड़े।

पौधों की वितरण व्यवस्था गायत्री शक्तिपीठ करौलीकुण्ड अलवर से बनाई गई थी। गायत्री परिवार द्वारा सभी पौधे निःशुल्क दिए गए हैं। वृक्षारोपण में स्थानीय

अलवर में वृक्षारोपण के लिए तत्पर गायत्री परिवार के सृजन सेनानी

दिया संगठन ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सर्वश्री विजय गुप्ता, मुकेश गुप्ता,

लगाए जा रहे हैं 5 से 8 फीट तक विकसित पौधे

अमित वशिष्ठ, राजेन्द्र मीना, नन्दन सिंह, कमलकान्त, दिनेश गुप्ता, राजेन्द्र सेठी, डा. सरोज गुप्ता, सतीश बडाया, श्रीमती ममता गुप्ता, मंजू चौहान, ज्योति गुप्ता, कमला सेन आदि का विशेष सहयोग मिला।

इस अभियान के अन्तर्गत रामगढ़ तहसील में 760 पौधे, खारवास में 15, स्काउट एवं गाइड कार्यालय में 20, दीया काम्प्लेक्स जेल सर्किल में 550 पौधे, उ.मा.वि. मानोताकलाँ में 200 पौधे तथा अन्य अनेक संस्थाओं में बड़ी संख्या में पौधे लगाए गए हैं।

21 विद्यालयों में रोपी 511 वृक्षों की पौध

होशंगाबाद। मध्य प्रदेश : शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में डोलरिया जिले की तहसील के 21 विद्यालयों में वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें कुल 511 वृक्षों की पौध लगाई गई है। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को श्री रघुनाथ प्रसाद हजारी एवं बी.एच.ई.एल. के चीफ इंजीनियर श्री बी.के. जैन ने जीवन में वृक्षों का महत्त्व समझाया।

कार्यक्रम पूरी आस्था और विधि-विधान के साथ हुआ। 21 विद्यालयों के प्रभारी परिजनों को तिलकोपरांत रक्षासूत्र बांधा गया। सर्वश्री सुधीर पाठक, पी. एन. मालवीय, महेश ठाकुर, महेश गौर आदि ने विद्यालयों में 'तरुपुत्र-तरुमित्र' योजना में वृक्ष लगाने और उनका संरक्षण करने के लिए विद्यालय प्रबन्धन को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का संचालन धनपाल सिंह राजपूत ने किया।

वृक्षपूजन एवं वितरण कार्यक्रम में भाग लेते 21 विद्यालयों के प्रतिनिधि

संकल्प से लगभग दो गुनी सफलता मिली

इस वर्ष 5000 पौधे लगाने का था संकल्प

सागर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार सागर ने इस वर्ष 5000 वृक्षों की पौध लगाने का संकल्प लिया था। स्थानीय प्राणवान नैष्ठिक परिजनों ने इसे पूरी निष्ठा और तन्मयता के साथ निभाया। उन्होंने अगस्त माह तक ही अपने संकल्प से कहीं अधिक वृक्षारोपण कर लिया है।

सागर शाखा ने 18 से 30 जुलाई के बीच पाँच बड़े कार्यक्रम किए, जिनमें 2678 पौधों का रोपण सुरक्षित तरीके से किया गया। सागर के आर्मी पब्लिक स्कूल में 500, के.वि.क्र.-2 मकरोनिय में 100 पौधे रोपे गए। श्री महेंद्र साहू जी के रेस्टोरेण्ट मिडवे ट्रीट परिसर बमोरी तिगड्डा सागर में 328 पौधे रोपे गए। गायत्री शक्तिपीठ रहली ने 1500 पौधों का रोपण कराया।

14 से 28 अगस्त 2021 तक के पखवाड़े में पूरे जिले में लगभग 1546 पौधे लगाए गए। इनमें 15 अगस्त को गायत्री परिवार बीना के समस्त परिजनों के सहयोग से बीना में लगभग 700 पौधों का रोपण विशेष उल्लेखनीय है।

सीवर ट्रीटमेंट प्लांट ,ग्राम पथरिया हाट में 75 पौधे, पूर्व सरपंच श्री माधोसिंह यादव जी के फॉर्महाउस में 100 पौधे, श्री अनिल श्रीवास्तव के फॉर्म हाउस में 250, श्री एम.आर. सिन्धे के फॉर्म हॉउस में 190 पौधे रोपना प्रमुख रहा। श्री एम.आर. सिन्धे ने 500 पौधे और रोपने का संकल्प लिया है। श्री राजकुमार ठाकुर भी इसी वर्ष 500 पौधे रोपेंगे।

15 अगस्त एवं रक्षाबन्धन पर्व के उपलक्ष्य में कई शिक्षण संस्थानों, संस्थाओं में बृहद् वृक्षारोपण अभियान चलाया गया।

ऋषि जमदग्नि वृक्षारोपण योजना

किसानों ने लगाई 250 वृक्षों की पौध

उज्जैन। मध्य प्रदेश : मध्य प्रदेश में चलाई जा रही वृक्षारोपण की ऋषि जमदग्नि योजना के अन्तर्गत ग्राम नजरपुर में 30 से अधिक किसानों ने अपने खेतों में 250 से अधिक फलदार पौधे रोपे। पौधों के वितरण एवं रोपण का कार्य तरूदेव पूजन और तरूपुत्र संरक्षण संकल्प के साथ हुआ। इन पौधों को उपलब्ध कराने में श्री बृजनारायण श्रीवास्तव एवं श्रीमती पंकज राजोरिया का विशेष सहयोग रहा।

तरुपुत्र यज्ञ के साथ मनाया वार्षिकोत्सव

पुणे। महाराष्ट्र

लोहगाँव शाखा प्रतिवर्ष गायत्री जयन्ती पर विशाल गायत्री महायज्ञ आयोजित करती है। इस वर्ष कोरोना के कारण यह संभव नहीं हुआ तो परिजनों ने प्रकृति की सुरक्षा के लिए जीवंत यज्ञ 'सामूहिक वृक्षारोपण' का कार्यक्रम आयोजित किया। इसके अन्तर्गत खंडोबा माल पहाड़ी पर 108 तरुपुत्र (नीम, पीपल एवं बरगद) का रोपण सम्पन्न हुआ। वृक्षों की सिंचाई व्यवस्था खंडोबा माल ट्रस्ट की ओर से की गई है। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में नए लोग शामिल हुए थे।

गुरुपर्व तक 1280 पेड़ लगाए

कानपुर देहात। उत्तर प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार शाखा कानपुर देहात द्वारा 5 जून 2021 से गुरुपूर्णिमा 24 जुलाई 2021 तक जनपद के अकबरपुर, भोगनीपुर, सिकंदरा डेरापुर, रसूलाबाद आदि तहसीलों में 1280 वृक्ष लगाए गए। इस कार्यक्रम में राम सेवक वर्मा का प्रसंशनीय योगदान रहा। कानपुर देहात के जिला समन्वयक श्री बिशन सिंह ने गायत्री परिवार के सभी परिजनों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। उन्होंने वृक्षारोपण को आपातकाल का युगधर्म मानते हुए लगाए गए पौधों की सुरक्षा का अनुरोध भी किया।

कानपुर नगर में ट्री-गार्ड सहित पौधे लगाये गए

बिजासन माता को ओढ़ा रहे हैं हरी चूनर

देवास । मध्य प्रदेश

देवास शाखा द्वारा इस वर्ष वृक्षारोपण के बृहद् अभियान का पाँचवा आयोजन ग्राम टिनोनिया में माँ बिजासन देवी की पहाड़ी पर हुआ, जिसमें कुल 51पौधे रोपे गए। गायत्री परिवार के राजेंद्र पोरवाल एवं महेश आचार्य के नेतृत्व में इंदौर के त्रिलोकसिंह सोलंकी के विशेष प्रयास से इस पहाड़ी पर विृक्षारोपण का निरन्तर अभियान चल रहा है। गायत्री परिवार की टीम इस पूरी पहाड़ी को हराभरा कर बिजासन माता को हरी चूनर पहनाने के लिए उत्साहित है।

बिजासन माता मंदिर की पहाड़ी पर वृक्षारोपण करते गायत्री परिवार के परिजन

मुम्बई के प्रतिष्ठित चिकित्सालय में तुलसी वृंदावन स्थापना

खारघर नवी मुंबई। महाराष्ट्र

'दिया' मुम्बई शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में इस वर्ष स्थान-स्थान पर तुलसी वृंदावनों की स्थापना का अभियान चला रहा है। अभिनव स्थापना विश्व प्रसिद्ध एडवांस्ड सेंटर फॉर ट्रीटमेंट, रिसर्च एंड एजुकेशन इन कैंसर, खारघर, नवी मुंबई में की गई। यह स्थापना डॉ. दिवाकर तिवारी और श्री प्रसन्ना सोपारकर की प्रेमपूर्ण स्मृति में भी की गई है। इस अवसर पर उपस्थित टाटा मेमोरियल सेन्टर के सभी डॉक्टर्स एवं श्री शेख और श्री सैयद हुमायूं जाफरी ने तुलसी वृंदावन का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम का संचालन हितेश जोशी, श्री एस के कौल, सुचिता शेट्टी, अधिवक्ता गायत्री नायक, डॉ. विक्रम कात्रे, विजय पटले और पूरी टीम द्वारा किया गया। उपस्थित लोगों को तुलसी के चमत्कारिक गुण, यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान, हारिये न हिम्मत पुस्तिकें बाँटी गईं।

युगऋषि ने स्वास्थ्य लाभ एवं आध्यात्मिक दृष्टि से तुलसी को विशेष महत्त्व दिया है। इसी को ध्यान में रखते हुए सघन बस्ती वाले महानगर मुम्बई में 'दिया' ने तुलसी स्थापना का अभियान चला रखा है। उनके द्वारा तुलसी वृंदावन की स्थापना की स्थापना के अलावा तुलसी विवाह, तुलसी उत्सव, तुलसी वाटिका, तुलसी टेरेस वृक्षारोपण, तुलसी वन, तुलसी वितरण आदि कार्यक्रम चलाए जाते हैं। जन्मदिन जैसे शुभ अवसरों पर उपहार स्वरूप तुलसी की पौध दी जाती है। कार्यक्रमों में 'तुलसी के चमत्कारिक गुण' पुस्तिका के निःशुल्क वितरण के साथ लोगों को महत्त्व भी बताया जाता है।

पिपरोदा की पहाड़ी पर रोपे 101 पेड़

गुना। मध्य प्रदेश

स्थानीय युवा संगठन 'दिया' ने पिपरोदा की पहाड़ी पर 101 पौधे रोपे। उनके द्वारा पीपल, आँवला, बरगद, सहजन, अमरूद के पौधे लगाए गए। वेदप्रकाश श्रीवास्तव, राजनारायण शर्मा, योगेश राठौर, श्याम श्रीवास्तव, सुरेन्द्र प्रजापति, परिव्राजक गिरधारी, प्रखर प्रजापति प्रमुख रूप से सक्रिय रहे।

हिमाचल प्रदेश में नए शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा

बिलासपुर। हिमाचल प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ (मंदिर) बिलासपुर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह दिनांक 23, 24 व 25 जुलाई 2021 की तारीखों में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों द्वारा सम्पन्न कराया गया। शक्तिपीठ के गर्भ गृह में तीन प्रतिमाओं की स्थापना हुई। श्री सुखदेव शर्मा, श्री सुखदेव शास्त्री जी व उनके सहयोगियों ने युगशक्ति गायत्री की उपासना से जीवन और समाज को श्रेष्ठतर बनाने का आह्वान उपस्थित श्रद्धालुओं से किया।

इस शक्तिपीठ के निर्माण में प्रधान ट्रस्टी श्री प्रेम लाल शर्मा ,श्री सुखराम भारद्वाज, श्री यशवंत सिंह चंदेल, श्री गोविंद राम ठाकुर, श्रीमती मीरा भोगल ,श्री गिरधारी लाल नड्डा, श्रीमती कमलेश नड्डा, श्री देशराज शर्मा, श्री रवेल सिंह राणा, श्री संतोष भारद्वाज, शिव कुमार, जिला संयोजक श्री परिवेश शर्मा, मध्य प्रदेश(भोपाल) के श्री प्रताप सिंह राणा व श्री बी एन शर्मा का विशेष सहयोग मिला। श्री नानक राम भारद्वाज, स्वर्गीय श्री शिव प्रसाद अरोड़ा, व गुजरात प्रांत के डीसा के श्री नवीन भाई रामजी भाई ठक्कर ने मंदिर के लिए भव्य मूर्तियाँ प्रदान कर मंदिर की शोभा बढ़ाई।

गायत्री शक्तिपीठ (मंदिर) निर्माण व प्रतिष्ठा के निमित 3 वर्षों से अखंड दीपक जलाकर अखंड ज्योति के सामने 35 लाख गायत्री मंत्र का सामूहिक जप किया गया एवं 11 लाख मंत्र लेखन करवाया गया।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

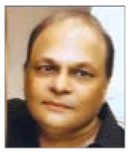

श्री प्रसन्ना सोपारकर, मुम्बई। महाराष्ट्र
गायत्री परिवार कॉर्पोरेट ग्रुप मुम्बई के प्राणवान युवा कार्यकर्त्ता श्री प्रसन्ना सोपारकर का दिनांक 14 अगस्त 2021 को आकस्मिक देहावसान हो गया। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुजाता सोपारकर के साथ मिलकर मिशन को जन-जन तक पहुँचाने और रचनात्मक कार्यक्रमों को गति देने में मुम्बई शाखा का बहुत बड़ा योगदान दिया है।

श्री मोहनलाल चौहान, रतलाम। मध्य प्रदेश
अपने जीवन काल में पूरी निष्ठा और तन्मयता के साथ मिशन के कामों में सक्रिय रहे अग्रणी कार्यकर्त्ता श्री मोहनलाल चौहान का 15 अगस्त 2021 को देवलोकगमन हो गया। वे 90 वर्ष के थे। 18 अगस्त को गायत्री परिवार रतलाम ने विशेष सभा आयोजित कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि दी। स्व. श्री मोहनलाल जी के पुत्र श्री महेश चौहान रतलाम (म.प्र.) में तथा श्री मुकेश चौहान हैदराबाद (तेलंगाना) में गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं।

श्री रघुनाथ मिस्त्री, बुरहानपुर। मध्य प्रदेश
गायत्री परिवार बुरहानपुर के प्रेरणा स्रोत श्री रघुनाथ मिस्त्री (दादा) का 101 वर्ष की आयु में दिनांक 19 अगस्त को देवलोक गमन हो गया। वे बुरहानपुर में मिशन की नींव रखने वालों में से एक थे। वे जीवनभर लोगों को यज्ञ व गायत्री साधना अभियान से जोड़ते रहे। वे सामान्य ग़रीब स्थिति होने के बावजूद अपना घर न बनाकर गायत्री शक्तिपीठ बुरहानपुर के निर्माण के लिए दान देने वाले दानवीर, भामाशाह थे।

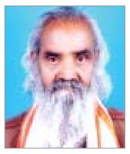

श्री कौशल प्रसाद पटेल, रायगढ़। छत्तीसगढ़
गायत्री शक्ति पिठ लैलूंगा के व्यवस्थापक, माँ गायत्री के वरद पुत्र स्व. कौशल प्रसाद पटेल के निधन पर गायत्री परिवार के हजारों परिजनों ने दिनांक12 अगस्त 21 को लैलूंगा में अश्रुपुरित नेत्रों से विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित की। वे स्पष्ट वक्ता, समन्वय वादी विचारक एवं गायत्री परिवार के स्तम्भ के रूप मे याद किये जाते रहेंगे। उनके पुत्र जगमोहन एवं गोविंद ने परम्परा से हटकर युगऋषि के बताए आदर्शों के अनुरूप उनका मरणोत्तर संस्कार सम्पन्न कराया।

श्रीमती सुधा सिन्हा, बोकारो स्टील सिटी। बिहार
बोकारो जिला में महिला मण्डल की प्रेरणास्रोत रहीं श्रीमती सुधा सिन्हा का 5 अगस्त को 55 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे गत 31 वर्षों से सक्रिय थीं।

श्री व्रजेश्वरी चरण वर्मा, बोकारो। बिहार
प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री व्रजेश्वरी चरण वर्मा का दिनांक 8 अगस्त को 80 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे 45 वर्षों से मिशन की सेवा कर रहे थे।

9 दिवसीय गर्भोत्सव कार्यशाला : पूरे प्रदेश में 6000 संस्कार संपन्न

रायपुर। छत्तीसगढ़
अखिल विश्व गायत्री परिवार की छत्तीसगढ़ इकाई ने 2 से 10 अगस्त तक गर्भ ज्ञान विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया। इसका समापन समारोह की मुख्य अतिथि महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती किरणमयी नायक थी। उन्होंने लुप्तप्राय होती जा रही संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए गायत्री परिवार की प्रशंसा की। पुंसवन संस्कार की महत्ता समझाते हुए उन्होंने कहा कि आने वाला शिशु अपने माता-पिता, कुल, परिवार तथा समाज के लिए विडंबना न बने, अपने सौभाग्य और गौरव का कारण बने इसलिए गर्भस्थ शिशु के शारीरिक बौद्धिक तथा भावनात्मक विकास के लिए यह संस्कार आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुञ्ज से 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान की राष्ट्रीय प्रभारी डॉ. गायत्री शर्मा द्वारा किया गया।

डॉ. गायत्री शर्मा कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए

अभियान की प्रान्त संयोजिका रुपाली गाँधी और सरला कोसरिया ने सेमिनार के कार्यक्रमों की जानकारी दी। नौ दिनों में विशेषज्ञों और चिकित्सकों के द्वारा वैज्ञानिक आधार पर गर्भ का ज्ञान-विज्ञान, गर्भवती की आदर्श दिनचर्या, आहार, गर्भावस्था में योग, ध्यान, प्राणायाम, गर्भसंवाद, गर्भावस्था के तनाव से मुक्ति, मन्त्र और सूक्ष्म यज्ञ का बच्चे पर प्रभाव, स्तनपान और शिशु का पोषक आहार जैसे कई विषयों को पीपीटी और वीडियो के द्वारा बहुत ही सरल और रोचक ढंग से समझाया गया।

कार्यशाला में प्रतिदिन हजारों की संख्याओं में गर्भवती एवं नव विवाहिता महिलाएँ हज़ारों की संख्या में शामिल होती थीं। जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि डॉ. ओ.पी. शर्मा, श्री सुखदेव निर्मलकर, छत्तीसगढ़ जोन समन्वयक श्री दिलीप पाणिग्रही, युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री ओम प्रकाश राठौर, रायपुर से लच्छूराम निषाद, श्रीमती सरला कोसरिया, श्रीमती रुपाली गाँधी का विशेष मार्गदर्शन व सहयोग मिला। महिला बाल विकास विभाग के अधिकारी भी उपस्थित रहे।

अत्यंत सफल एवं लोकप्रिय है घर-घर जनसंपर्क एवं देवस्थापना अभियान

इन दिनों पूरे देश में शान्तिकुञ्ज की लगभग 30 टोलियाँ सक्रिय हैं। कोरोना काल में पीड़ित परिजनों को सान्त्वना देना, घर-घर जाकर आत्मीयता का विस्तार करते हुए समस्त मानवता के कल्याण हेतु युगशक्ति गायत्री की उपासना के लिए उन्हें सहमत करना, देवस्थानाएँ एवं गंगाजली की स्थापना कराना जैसे उद्देश्यों के साथ ये टोलियाँ शान्तिकुञ्ज के प्राण प्रवाह का अभिसिंचन कर रही हैं। रक्षाबन्धन से पूर्व निकली ये टोलियाँ अपने साथ श्रद्धेया जीजी का दिया स्नेह-सूत्र भी साथ ले गई हैं। युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज का यह दिव्य प्रसाद लोगों को खूब प्रेरित और प्रभावित कर रहा है। एक-एक जिले में हज़ारों घरों में देवस्थापनाएँ हो रही हैं। आशा है युगशक्ति का यह दिव्य प्रवाह थकी-हारी मानवता में नवचेतना का संचार कर उन्हें अवाञ्छनीयताओं के विरुद्ध संगठित होने की शक्ति प्रदान करेगा।

धमतरी में देवस्थापना

अम्बिकापुर की देवस्थापना गोष्ठी में रक्षासूत्र बाँधते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

चित्रकूट में गणमान्यों का सम्मान

5000 परिवारों में देवस्थापनाएँ

धमतरी। छत्तीसगढ़ : शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों के धमतरी प्रवास पर धमतरी जिले के पाँचों विकास खण्डों धमतरी, कुरुद, मगरलोड, नगरी एवं भखारा में समाचार मिलने तक लगभग 5000 से भी अधिक परिवारों में विधिवत देवस्थापना एवं गंगाजल की स्थापना जा चुकी थीं। जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग ने बताया कि इन स्थापनाओं को लेकर पूरे जिले में लोगों में बहुत उत्साह है। हर वर्ग माँ गायत्री की अनुकम्पा का आकांक्षी है। पूरे श्रावण मास में स्थानीय कार्यकर्त्ताओं द्वारा देवस्थापना कार्यक्रम चलाया जाएगा। धमतरी जिले के कुल 10500 परिवारों में गंगाजल एवं देवस्थापना का लक्ष्य रखा गया है।

1000 परिवारों से सम्पर्क हुआ

अंबिकापुर, सरगुजा। छत्तीसगढ़ : सरगुजा उपजोन के पांचों जिले में जनसंपर्क एवं देवस्थापना अभियान को गति देने के लिए 11 अगस्त को शान्तिकुञ्ज से श्री पूरन चंद्राकर की टोली पहुँची। शक्तिपीठ सभागृह में परिजनों की गोष्ठी एवं दीपयज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्रद्धेया जीजी द्वारा प्रेषित रक्षासूत्र पाकर सभी कार्यकर्त्ता गद्गद हुए। इस सूत्र की साक्षी में युग निर्माण आन्दोलन को गति देने के प्रशंसनीय संकल्प भी उभरे।

टोली के पाँच दिवसीय सरगुजा प्रवास में सभी ब्लॉकों के लगभग 1000 परिजनों से मुलाकात हुई। कोरोना संक्रमण से आए गतिरोध के दो वर्ष बाद शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों के प्रवास ने पूरे क्षेत्र में विशेष उर्जा का संचार किया। कार्यकर्त्ताओं में जनसंपर्क एवं आत्मीयता विस्तार के कार्य को गति देने का उत्साह उभरा।

400 प्रतिष्ठित गणमान्यों के घर देवस्थापना हुई

चित्रकूट। उत्तर प्रदेश : केन्द्रीय प्रतिनिधियों की एक टोली 14 से 16 अगस्त तक चित्रकूट उपजोन में जनसंपर्क अभियान को गति देने पहुँची थी। शक्तिपीठ व्यस्थापक श्री रामनारायण त्रिपाठी के अनुसार यह प्रवास अत्यंत उपलब्धिपूर्ण रहा। लगभग 400 प्रतिष्ठित गणमान्यों के घरों में देवस्थापनाएँ हुई। इनमें हाईकोर्ट प्रयागराज के न्यायमूर्ति आर.के. गौतम, पुलिस अधिक्षक चित्रकूट, समाज कल्याणअधिकारी श्रीमती नीलम सिंह, मुख्य चिकित्सक, मुख्य पत्रकार, जिला भा.ज.पा. अध्यक्ष चंद्रप्रकाश खरे, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पंकज अग्रवाल, प्रान्त प्रचारक कानपुर तथा 24 अन्य प्रचारकों, राष्ट्रऋषि नानाजी देशमुख के प्रमुख अभय महाजन आदि अनेक गणमान्यों के यहाँ युगशक्ति गायत्री की प्रतिष्ठा की गई। क्षेत्र के अनेक सामाजिक संगठनों तक मिशन का संदेश पहुँचा, उनके प्रमुखों के यहाँ देवस्थापनाएँ की गईं। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री अजय देवांगन व श्री दिलधिर यादव की टोली ने सभी ब्लाकों में कार्यक्रम सम्पन्न कराए। सात स्थानों पर गोष्ठियाँ आयोजित की गईं।

परमात्मचेतना में विलीन हो गए शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री रघुनाथ यादव

शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री रघुनाथ यादव दिनांक 1 अगस्त 2021 को पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। मात्र 17 वर्ष की उम्र में अपना जीवन मिशन के लिए समर्पित कर देने वाले स्व. श्री रघुनाथ जी छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले की कोण्डागाँव तहसील के ग्राम डोगरी गुड़ा राउतपारा के निवासी श्री भानुराम यादव एवं श्रीमती सनवारिन बाई के सुपुत्र थे। एक बार शान्तिकुञ्ज आ जाने के बाद वे पूरी तरह मिशन के लिए समर्पित रहे। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में उन्होंने वनौषधि विभाग की प्रयोगशाला (काढ़ा लैब) में सेवाएँ दीं। सरल एवं हँसमुख स्वभाव के स्व. श्री रघुनाथ जी ने वहाँ स्थापित गायत्री माता मंदिर एवं 24 प्रतिमाओं की पूरे मनोयोग से सेवा की।

टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में वाङ्मय स्थापना

जौनपुर। उत्तर प्रदेश
सोनानन्दन टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, जौनपुर के पुस्तकालय में युगऋषि के वाङ्मय के सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापना हुई। यह स्थापना गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ द्वारा कराई गई। प्रसिद्ध पुस्तकालयों में वाङ्मय स्थापना अभियान की कड़ी में यह 345वीं स्थापना थी, जिसे गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट की सक्रिय सदस्य सुश्री श्रीमती रेखा सिंह ने भेंट किया है। संक्षिप्त समारोह में अभियान संयोजक श्री उमानन्द शर्मा ने समाज के नैतिक उत्थान में युगऋषि के विचारों के योगदान पर प्रकाश डाला।

श्रावणी पर्व ने बढ़ाया आत्मिक उल्लास

ब्राह्मणत्व जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है

- **30 बटुकों का उपनयन संस्कार।**
- **250 परिवारों में तीर्थ-प्रतीकों की स्थापना हुई।**

हैदराबाद। आन्ध्र प्रदेश
गायत्री प्रज्ञापीठ, गोशामहल हैदराबाद में 5 कुण्डीय यज्ञ के साथ श्रावणी पर्व मनाया गया। इसमें हैदराबाद, सिकन्दराबाद व तेलंगाना ब्राह्मण समाज के सैकड़ों ब्राह्मणों ने भाग लिया। सामूहिक दशस्नान पूजन और पितृ-तर्पण के साथ 30 बटुकों का उपनयन संस्कार हुआ। इस शुभ अवसर पर 250 परिवार में महाकुम्भ हरिद्वार का गंगाजल व गायत्री माता के प्रतीक चित्रों की स्थापना भी की गयी। यज्ञ के बाद गंगाजल व युग साहित्य पाकर ब्राह्मण समाज बहुत प्रसन्न हुआ।

कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री परमानंद द्विवेदी व श्री एन. वी. शिवाजी राव के नेतृत्व में श्री गोकुलचंद उपाध्याय की टीम ने किया। श्री परमानन्द द्विवेदी ने श्रद्धालुओं को श्रावणी पर्व पूजन, उपनयन संस्कार की महत्ता बताई। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण जीवन ही मानवता की श्रेष्ठतम उपलब्धि है, जिसे संकल्प और साधना से अर्जित किया जाता है। कार्यक्रम की सफलता में राजस्थानी ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम लाला, मन्त्री रामदेव नागला, दामोदर जोशी, रामनिवास पाराशर व गायत्री परिवार के श्री शिवाजी राव, गोकुल चन्द उपाध्याय, रतनलाल ओझा, पारस ओझा सहित हैदराबाद व सिकन्दराबाद के परिजनों का उत्कृष्ट योगदान रहा।

हैदराबाद में उपनयन संस्कार कराते बटुक

निमाड़ क्षेत्र में फिर लौटेंगी अमराई

गायत्री परिवार द्वारा किसानों में बाँटे जा रहे हैं केशर आम की उन्नत किस्म के 5000 पौधे बाँटे

कसरावद, खरगोन। मध्य प्रदेश
गायत्री धाम सेंधवा के संचालक-साधक श्री मेवालाल पाटीदार ने निमाड़-मालवा क्षेत्र में अमराई को पुनः स्थापित करने के लिए एक विशेष अभियान चलाया है। इसके अन्तर्गत खरगोन जिले की प्रत्येक तहसील के 50-50 किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले आमों की 5-5 पौधे देने की योजना बनी थी।

हरियाली अमावस के दिन कसरावद में आयोजित किसान सम्मेलन में पौध वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिले के 250 किसानों को कुल 1250 पेड़ निःशुल्क वितरित किए गए। 600 रुपये प्रत्येक पेड़ की कीमत वाले इन उच्च गुणवत्ता वाले पेड़ों को गुजरात से मँगाया गया है। ऐसे कुल 5000 केशर आम के पौधे खरगोन और आसपास के जिलों में लगाए जा रहे हैं।

श्री मेवालाल जी ने किसानों को आम की पौध लगाने की विधि बताई और उसके विशेष लाभ भी समझाए। उन्होंने कहा कि आम के वृक्ष फसलों की पैदावार में सहायक होते हैं। खेतों की मेड़ पर आम्रवृक्ष होने से मित्र कीट व मित्र पक्षी अधिक आते हैं। कीटनाशकों के छिड़काव की अधिक आवश्यकता नहीं पड़ती। मधुमक्खी किसानों की सबसे बड़ी मित्र है, जो आम के वृक्षों में फलों का अभाव नहीं होने देती।

सम्मेलन में उपस्थित सभी किसानों से पेड़ों की सुरक्षा व पोषण का वचन लिया गया, लिखित शपथ दिलाई गई। इन पेड़ों का समय-समय पर निरीक्षण करने की जवाबदारी भी गायत्री परिवार के हर तहसील प्रमुख को सौंपी गई है।

प्रकृति की सुरम्य गोद में मनाया श्रावणी पर्व

कट्ठीवाड़ा। मध्य प्रदेश
गायत्री परिवार कट्ठीवाड़ा के परिजनों ने श्रावणी पर्व प्राकृतिक झरने की गोद में बैठकर दशस्नान विधि पूरी करते हुए हर्षोल्लास से मनाया। इसके पश्चात सामूहिक यज्ञ हुआ, जिसमें बुराइयाँ त्यागने और अच्छाइयाँ ग्रहण करने के संकल्प के साथ आहुतियाँ डाली गईं। परिव्राजक श्री नानसिंह चौहान ने प्रभावशाली प्रेरणाओं के साथ पर्व का वैदिक विधान सम्पन्न कराया। इस आयोजन में कट्ठीवाडा, इन्दलवाट, भूरिआम्बा, मोटीबडोई, भोलवाट, गुनाटा (गुजरात), बोकड़िया, बेडशीट, कोलू, झेर व कोठाडमवड़ा गाँव से 60 से अधिक परिजनों ने भाग लिया था। सर्वश्री संतोष वर्मा, खुरबान तोमर, सुरसिंह चौहान, रुपसिंह बारिया, शंकर सिंह भिण्डे, रामसिंह राठवा के प्रयासों से यह सुरम्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

एक झरने में बैठकर दशस्नान विधि करते परिजन

1000 फलदार और औषधीय पौधे रोपे

नागदा । मध्य प्रदेश
गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट नागदा द्वारा विगत 2016 से ग्रासिम इंडस्ट्रीज़ लि. के सहयोग से जवाहर नवोदय विद्यालय एवं लक्ष्य इंटरनेशनल स्कूल की 32 एकड़ जमीन पर प्रतिवर्ष वृक्षारोपण किया जा रहा है। इस वर्ष भी दोनों स्थानों पर 22 जुलाई को लगभग 1000 फलदार एवं औषधीय पौधों का रोपण किया गया। इस कार्यक्रम में उज्जैन से पधारे क्षेत्रीय समन्वयक श्री राजेश पटेल, डॉ. देवेन्द्र श्रीवास्तव, श्री महेश कानडे, शक्तिपीठ परिव्राजक अनिकेश पटेल एवं गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट के सदस्यगण उपस्थित थे।

> ग्रासिम इंडस्ट्रीज के सम्माननीय अधिकारियों एवं नवोदय विद्यालय व लक्ष्य इंटरनेशनल स्कूल के प्राचार्य को उनके उत्कृष्ट सहयोग के लिए 'हरित पुरोधा सम्मान' प्रदान किया गया।

चार स्थानों पर तरुपुत्र महायज्ञ के साथ मनाया हरियाली महोत्सव

शाजापुर। मध्य प्रदेश
शांतिकुंज स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ शाजापुर द्वारा सघन वृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में हरियाली अमावस्या के दिन चार स्थानों पर तरुपुत्र महायज्ञ आयोजित किये गए। प्रथम कार्यक्रम ग्राम सांपखेड़ा में हुआ जहाँ जय गिरिराज थ्रेशर में 51 पौधे लगाए गए। तत्पश्चात् कृषि उपज मण्डी प्रांगण में 11 पौधे, वृद्धजन सेवा निकेतन में 24 पौधे एवं जिला कारागार परिसर में 21 पौधे पूरे विधि-विधान के साथ रोपे गए।

कारागार के कार्यक्रम में जेलर श्री गोपाल सिंह गौतम ने गायत्री परिवार के वृक्षारोपण अभियान की सराहना की और स्वयं श्रमदान कर इसके प्रति अपनी निष्ठा दिखाई। उनके द्वारा लगाए गए पौधों की सुरक्षा के लिए ट्रीगार्ड व पानी का प्रबंध पहले से ही कर लिया गया था। गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री प्रदीप कुमार वैद्य सहित सभी परिजनों ने पूरे दिन का समयदान कर हरियाली महोत्सव को उत्साह व संकल्प के साथ मनाया।

जिला कारागार परिसर में वृक्षारोपण समारोह

तुलसी रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया

उन्नाव। उत्तर प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ उन्नाव में श्रावणी पर्व उल्लास पूर्वक मनाया गया। श्रावणी उपाकर्म के विधि-विधान के अन्तर्गत तुलसी के पौधों का रोपण करते हुए स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया गया। श्री सिद्धनाथ श्रीवास्तव ने रक्षाबन्धन एवं श्रावणी पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

उन्नाव में हुआ प्रतीकात्मक तुलसी रोपण

देवास। मध्य प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर एवं गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर पर श्रावणी एवं रक्षाबन्धन पर्व पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ मनाया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने इसमें भाग लेते हुए दसस्नान, पूजन, पितृ तर्पण आदि क्रियाएँ सम्पन्न कीं। शक्तिपीठ पर श्रावणी उपाकर्म श्री चन्द्रिका शर्मा एवं महेश आचार्य के नेतृत्व में हुआ तो विजय नगर प्रज्ञापीठ पर सुश्री दुर्गा दीदी के मार्गदर्शन में सभी ओयाजन हुए। श्री विक्रम सिंह चौधरी के अनुसार दोनों ही जगह कार्यक्रम श्रद्धा व उल्लास से सम्पन्न हुए।

सफाईकर्मी बहिनों का सम्मान किया

इन्दौर। मध्य प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ केशरबाग में परिजनों ने रक्षाबन्धन-श्रावणी पर्व पर सफाईकर्मी बहनों का विशेष रूप से स्वागत कया गया। सम्मानस्वरूप उन बहिनों को मन्त्रचादर, मिठाई, युग साहित्य व सम्मान पत्र प्रदान किए गए। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री सुनील शर्मा ने पर्व की प्रेरणा दी। उन्होंने इसे देते हुए इसे प्रेम आत्मीयता विस्तार का पर्व बताया।

अपने लगाये उपवन में बनाया दिवंगत पुत्र का स्मारक

निम्बोल, धार। मध्य प्रदेश
कुक्षी तहसील के एक छोटे से ग्राम निम्बोल में एक पहाड़ी है, जो नौ वर्ष पूर्व तक वीरान और सूखी पड़ी थी। गाँव के नवयुवकों, विशेषकर राकेश पाटीदार, जितेंद्र पाटीदार, दिलीप पाटीदार, मुकेश पाटीदार ने नौ वर्ष पूर्व वहाँ वृक्षारोपण कार्य प्रारंभ किया था। प्रारंभ में 1200 पौधे लगाए, जिनमें से 350 त्रिवेणी (बड़, पीपल, नीम) हैं। अगले चरण में लगभग 1000 पौधे रोपे गए। आज यह पहाड़ी पूरी तरह से हरीभरी हो गई है।

दुर्भाग्यवश विगत 15 अप्रैल को राकेश पाटीदार के इकलौते पुत्र आदर्श का सड़क दुर्घटना में असामयिक निधन हो गया। उसकी स्मृति में इसी पहाड़ी पर 9 अगस्त को 'राम चबूतरा' की स्थापना की गई। (दिवंगत बेटे का दूसरा नाम राम भी है।) सेंधवा से आए श्री मेवालाल पाटीदार के सान्निध्य में वृक्षारोपण का प्रेरणाप्रद कार्यक्रम भी हुआ। इस अवसर पर श्री राकेश पाटीदार और उनके परिवार ने अविचलित रहते हुए लोककल्याण के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते रहने का संकल्प लिया है।

रक्षासूत्र बाँधकर पौधों की देखभाल का संकल्प दिलाया

जमशेदपुर। झारखण्ड
गायत्री ज्ञान मंदिर भालुबासा में सामूहिक रूप से रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया गया। बहनों ने नवयुगदल के युवाओं तथा वरिष्ठ भाइयों को रक्षासूत्र बाँधकर उनके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की। परिजनों को अपने लगाये गए पौधों की देखभाल करने का संकल्प भी दिलाया गया।

टाटानगर में रक्षाबन्धन पर्व मनाते कार्यकर्त्ता भाई-बहिन

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में पौधारोपण कार्यक्रम

इछावर, सिहोर। मध्य प्रदेश
गायत्री परिवार के तत्त्वावधान में दीवड़िया सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में पौधारोपण किया गया, जिसमें अतिथियों सहित अस्पताल स्टाफ द्वारा पौधे रोपे गए। महेश विजयवर्गीय, चंपालाल वर्मा, अस्पताल प्रभारी डॉ.अनुज माहेश्वरी, प्रीति, नेहा सोलंकी ने पौधे रोपे। समाजसेवी प्रमोद सुराना की स्मृति में यह कार्यक्रम रखा गया था।

चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी वृक्षारोपण करते हुए

मनुष्य के भीतर जो अदृश्य रहस्य छिपे पड़े हैं, उन्हें प्रत्यक्ष करने वाली शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। - स्वामी विवेकानन्द

जन्माष्टमी के दिन पूरे देश में बड़े हर्षोल्लास के साथ मना राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ

शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में इस वर्ष पूरे देश में 'शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन' की स्थापना की जा रही है। इस दृष्टि से जन्माष्टमी-30 अगस्त 2021 के दिन शान्तिकुञ्ज द्वारा घोषित राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ बहुत सफल और उत्साहवर्धक सिद्ध हुआ। 10 हज़ार से अधिक शाखाएँ/परिजन शान्तिकुञ्ज से ऑनलाइन ज़ूम एप, फेसबुक, यू-ट्यूब आदि के माध्यम से जुड़े। 180 स्थानों पर 'शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन' की स्थापना होने के साथ वृक्षारोपण के विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। बृहद् स्तर पर आयोजित हमें प्राप्त कुछ प्रमुख कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

''किसी को हमारा स्मारक बनाना हो तो वह वृक्ष लगाकर बनाया जा सकता है। वृक्ष जैसा उदार, सहिष्णु और शान्त जीवन जीने की शिक्षा हमने पाई, उन्हीं जैसा जीवनक्रम लोग अपना सकें तो बहुत अच्छा होगा। हमारी प्रवृत्ति, जीवन विद्या और मनोभूमि का परिचय वृक्षों से अधिक और कोई नहीं दे सकता, अतएव वे ही हमारे स्मारक हो सकते हैं।'' - **प.पू. गुरुदेव**

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन स्थापना समारोह

'दिया' राजस्थान की सक्रियता

'दिया' राजस्थान द्वारा 30 अगस्त को राज्य के कई जिलों में शान्तिकुञ्ज स्मृति उपवनों की स्थापना की गई। यह स्थापनाएँ माधव गोविंद गौशाला बाँसथूनी, जिला बाराँ (जहाँ 6 किलोमीटर क्षेत्र में लगभग 500 बरगद पीपल लगे हुए हैं), कोटा में श्रीराम स्मृति उपवन में, जोधपुर के धिंगाना गाँव में, जैसलमेर, अनोपपुरा चित्तौड़गढ़, अलवर, जयपुर और चुरू में की गईं। कई जगहों पर श्रीराम स्मृति उपवन, शाक वाटिका, माता भगवती की बाड़ी की स्थापनाएँ की गईं।

ऊँची पहाड़ी बनेगी गायत्री परिवार की पहचान

जयपुर। राजस्थान : जयपुर शाखा ग्राम घाटा में पहाड़ी पर बृहद् स्तर पर वृक्षारोपण कर उसे हराभरा बना रही है। वहाँ पिछले कुछ वर्षों से बृहद् वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। अब तक लगाये गए हज़ारों पौधों को विकसित किया जा रहा है।

30 अगस्त को राष्ट्रीय तरुपुत्र महायज्ञ के उपलक्ष्य में वहाँ विशाल यज्ञ एवं वृक्षारोपण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस पहाड़ी का नामकरण 'शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती स्मृति उपवन' किया गया। कार्यक्रम में 70 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लेते हुए वृक्षारोपण किया। ऊँची पहाड़ी पर भी व्यवस्थापक श्री रणवीर सिंह चौधरी सहित वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की भागीदारी सबके लिए प्रेरक और उत्साहवर्धक रही।

निजी भूमि पर बने स्वर्ण जयन्ती वन

कुम्हेर, भरतपुर। राजस्थान : श्री कृष्ण जन्माष्टमी के दिन कुम्हेर शाखा ने राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण, तरुपूजन महायज्ञ बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। कुम्हेर के परिजनों ने ग्राम पंचायत सिरसई में शान्तिकुन्ज स्वर्ण जयंती स्मृति वन की स्थापना की और पंचवटी (बरगद, पीपल, गूलर, नीम व करंज) का रोपण किया। कार्यक्रम में अग्रवाल समाज कुम्हेर के अध्यक्ष श्री भगवत प्रसाद बजाज, नगरपालिका कुम्हेर के चैयरमैन श्री राजीव अग्रवाल, श्री मिथलेश बैद्य एवं श्री जीतू अग्रवाल प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। श्री श्याम सुंदर शर्मा एवं श्री छगन लाल जी ने अतिथियों को कदम्ब के पौधे भेंट किए।

गायत्री परिवार कुम्हेर द्वारा जुलाई और अगस्त में कुम्हेर तहसील के विभिन्न स्थानों पर लगभग 500 पौधे वितरित कर रोपित कराये हैं। श्री भगवत प्रसाद बजाज, अध्यक्ष अग्रवाल समाज ने कुम्हेर के श्मशान परिसर में ही 100 पौधे लगवाये हैं।

एक लाख वृक्ष लगाने का संकल्प

जहानाबाद। बिहार : युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद के माध्यम से रतनी प्रखंड के बदलु बिगहा गाँव के किसान सरयु शरण की निजी भूमि पर शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती उपवन की स्थापना की है। राष्ट्रीय वृक्षारोपण महायज्ञ के साथ वहाँ दो सौ एक पौधे रोपे गए।

राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ के अवसर पर जहानाबाद जिला में प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ के माध्यम से एक लाख वृक्ष लगाने का संकल्प लिया गया है। वहाँ प्रत्येक रविवार को तथा विशेष अवसरों पर नियमित रूप से वृक्षारोपण का कार्यक्रम चलाया जाएगा।

विश्वविद्यालय में स्थापना हुई

सागर। मध्य प्रदेश : गायत्री परिवार सागर के प्रयास-पुरुषार्थ से स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर में शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन की स्थापना की गई। इसमें लगभग 400 पौधों का रोपण किया गया व तुलसी के लगभग 500 पौधे वितरित किए गए। स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता एवं स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी जी ने अपने स्टॉफ के साथ वृक्षारोपण किया। गायत्री परिवार की ओर से श्री योगेश शांडिल्य जी, श्री आर.डी. शर्मा जी, श्री जी.पी. सक्सेना सहित सभी ने वृक्षारोपण किया। शा.प्रा. शाला बाबूपुरा सागर में भी 25 पौधों का रोपण किया गया।

इकोलॉजी पार्क में बनाया स्वर्ण जयन्ती वन

भोपाल। मध्य प्रदेश : भोपाल में युवा प्रकोष्ठ द्वारा इकोलॉजी पार्क लहरपुरा में शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती वन की स्थापना करते हुए बृहद् वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर श्री डी.पी.एस. चौहान फॉरेस्ट अधिकारी, श्री बृज आनन्द यादव, श्री ओंकार दीक्षित सहित वन विभाग के अधिकारी, कर्मचारी और गायत्री परिवार के वरिष्ठ व कर्मठ भाई-बहिन श्री रामचन्द्र गायकवाड, प्रेमलाल कुशवाहा, अनुसूया धाकड़, शोभा रस्तोगी आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर कुल 290 पौधे लगाए गए।

जबलपुर। मध्य प्रदेश : शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती उपवन ग्राम उर्दगवाँ, तहसील कुंडम में गायत्री परिजनों एवं ग्रामवासियों की उपस्थिति में 251 पौधों का पूजन-रोपण किया गया। सिहोरा विधायक श्रीमती नंदनी मरावी एवं कुंडम जनपद पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री ओंकार प्रसाद मरावी ने देव पूजन-तरुपूजन किया। श्री प्रकाश मूरजानी, श्री रमेश पटेल, श्री भास्कर तिवारी की टोली ने यज्ञ संचालन करते हुए शान्तिकुञ्ज के वृक्षगंगा अभियान में अधिक से अधिक योगदान करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के समापन पर सभी परिजन माता भगवती की बाड़ी/ शाक वाटिका/ लघु आरोग्य वाटिका स्थापित कर उनमें अधिक से अधिक पौधे लगाने हेतु संकल्पित हुए।

उज्जैन, मध्य प्रदेश के इंजीनियरिंग कॉलेज में स्थापित शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती स्मृति उपवन में तरुमिलन एवं रक्षाबन्धन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

देवास, मध्य प्रदेश के परिजनों ने सारोला गाँव के पास तालाब के किनारे नक्षत्र वाटिक की स्थापना की। हर नक्षत्र से सम्बन्धित 27 पौधे तथा 21 फलदार वृक्षों की पौध लगाई गई। प्रज्ञापीठ विजय नगर पर सुश्री दुर्गा दीदी के मार्गदर्शन में श्रीराम हर्बल गार्डन में तरुमिलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

वाराणसी। उत्तर प्रदेश : गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी के संयोजन में बड़ा गाँव ब्लॉक स्थित वृहद गोवंश आश्रय स्थल, मधुमक्खियाँ, वाराणसी के विशाल प्रांगण में राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम कदम्ब के पौधे का पूजन व रोपण किया गया। तत्पश्चात् आम, नीम, बरगद, जामुन सहित 151 पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम का संयोजन पंडित गंगाधर उपाध्याय जिला समन्वयक, वाराणसी ने किया ।

उपजोन में हुए अनेक कार्यक्रम

वडोदरा। गुजरात : 30 अगस्त के दिन वडोदरा उपजोन के पाँचों जिलों में वृक्षपूजन, वृक्षारोपण के कई कार्यक्रम आयोजित हुए। पाँचों जिला मुख्यालयों वडोदरा, आणंद, भरूच, छोटा उदेपुर तथा राजपीपला में आयोजित कार्यक्रमों में युवाओं और बाल संस्कार शाला से जुड़े बच्चों में वृक्षारोपण के प्रति विशेष उत्साह देखा गया। सभी को पर्यावरण संरक्षण के इस अभियान में निरंतर जुड़े रहने तथा लगाये गए पौधों का पोषण-संरक्षण करने की प्रेरणा दी गई।

बृहद् अश्वमेध उपवन में 8

टिटवाला, ठाणे। महाराष्ट्र

अश्वमेध उपवन टिटवाला में प्रातःकाल यज्ञ के साथ 108 तरुपुत्र वृक्षारोपण महायज्ञ एवम शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती वन की स्थापना का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। उल्लेखनीय है कि इस स्थान पर गायत्री परिवार ने पहले से ही मियावाकी पद्धति से बृहद् स्तर पर वृक्षारोपण कर पूरे क्षेत्र को हराभरा किया है। राष्ट्रीय तरुपुत्र महायज्ञ ने कार्यकर्त्ताओं में हरीतिमा संवर्धन के प्रति उत्साह बढ़ाया।

एक और कार्यक्रम लक्ष्मीनारायण गौशाला, गांव कांबा में अयोजित हुआ। वहाँ 108 तरुपुत्र वृक्षारोपण हुए एवं यज्ञ आहुति दी गई।

देश में उभरे उत्साह की झलक-झाँकी

भोपाल : इकोलॉजी पार्क लहरपुरा में शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती वन की स्थापना

जयपुर : ऊँची वीरान पहाड़ी पर तरुपुत्र महायज्ञ में भाग लेते कर्मठ कार्यकर्त्ता

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन होशंगाबाद की स्थापना

शिरपुर, महाराष्ट्र में छत पर बनाई माताजी की बाड़ी

भुबनेश्वर (ओडिशा) के मेडिकल कॉलेज में स्मृति वन

कुम्हेर, भरतपुर (राज.) में निजी भूमि पर बनाया स्मृत वन

कोलकाता (प. बंगाल)

जहानाबाद, बिहार में तालाब के किनारे रोपी वृक्षों की पौध

शाजापुर (म.प्र.) 1100 पौधे रोपण

रतलाम : एसएसपी की उपस्थिति में लगाए 108 पौधे

वाराणसी में वृक्षारोपण का उत्साह

शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष : राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ

180 स्थानों पर शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती स्मृति वनों की स्थापना हुई

तरु-मिलन की विधि सम्पन्न करते बाँये से श्री गिरि, श्री रविशंकर जी, डॉ. चिन्मय जी, डॉ. ओ.पी. शर्मा

शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में जन्माष्टमी (30 अगस्त 2021) के दिन घोषित राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ अभूतपूर्व सफलता और उत्साह के साथ मनाया गया। पूरे देश में हज़ारों की संख्या में वृक्षारोपण समारोह आयोजित हुए। इनके द्वारा शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वन, माताजी की बाड़ी एवं गमलों में स्वास्थ्य प्रकल्पों के अन्तर्गत वृक्षारोपण किया गया।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रमों का संचालन गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज में मुख्य सभागार से हुआ। उत्तराखण्ड सरकार में अपर सचिव आदरणीय श्री सी रविशंकर जी समारोह के मुख्य अतिथि थे। मुख्य वक्ता एवं उत्प्रेरक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय के अलावा आद. डॉ. ओ.पी. शर्मा, जोन समन्वयक तथा श्री योगेन्द्र गिरि, मध्य जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि भी मंचासीन रहे।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने ऑनलाइन अपना संदेश देते हुए पूरे देश में शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वनों की स्थापना पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि जहाँ स्वर्ण जयन्ती वन बनाये जा रहे हैं वहाँ गोशालाएँ और वनौषधि उद्यान भी लगाए जाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय तरुपुत्र महायज्ञ की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि प्रकृति हमारी जीवन्त माँ है। इस पर प्रहार हमारे जीवन पर ही प्रहार है। उन्होंने कहा कि भारतीय चिन्तन-दर्शन प्रकृति के साथ एकात्मता स्थापित कर जीने की प्रेरणा देता है। हमारी संस्कृति जाग्रत् देवता-धरती, वायु, सूर्य, जल, वृक्ष-वनस्पति का वंदन-पोषण करने का संदेश पहले देती है।

श्री सी. रविशंकर अपने पिता और परिवार के साथ गायत्री परिवार के लिए समर्पित कार्यकर्त्ता के रूप में पीत वस्त्रों में ही पधारे थे। अपने उद्बोधन में गायत्री परिवार के साथ जुड़ने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने मंच से कहा कि मैं अब अपने को इस परिवार का अंग-अवयव अनुभव करने लगा हूँ।

इस कार्यक्रम से वरिष्ठ पर्यावरणविद् डॉ. प्रवीण चन्द्र दुबे, से.नि. प्रधान वन संरक्षक मध्य प्रदेश भी जुड़े, अपना संदेश दिया।

विशिष्ट झलकियाँ

- पूरे देश में वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित हुए। सभी ऑनलाइन शान्तिकुञ्ज से जुड़े हुए थे।
- मंच के समक्ष 'माताजी की बाड़ी (श्रद्धा रोपणी)' और 'गमलों में स्वास्थ्य (लघु आरोग्य वाटिका)' में लगाए जाने वाले पौधों का प्रदर्शन किया गया था। मंचासीन अतिथियों ने उनकी पट्टिकाओं का अनावरण किया। इसके साथ ही पूरे देश में लगाए जाने वाले वनों की पट्टिकाओं का अनावरण हुआ।
- वृक्षारोपण महाअभियान के प्रभारी श्री के.पी. दुबे जी के मार्गदर्शन एवं श्री आशीष सिंह के संचालन में पूरे विधि-विधान के साथ पौधों का पूजन और तरुमिलन कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।
- शान्तिकुञ्ज के युगगायकों ने अपने प्रेरक गीतों से वातावरण में उत्साह का संचार किया।
- आद. डॉ. चिन्मय जी एवं श्रीमती शेफाली जीजी ने शान्तिकुञ्ज परिसर में वृक्षारोपण किया। आद. श्री सी. रविशंकर ने अपने परिवार के साथ शान्तिकुञ्ज में वृक्ष की पौध लगाई।
- अनेक राज्यों ने अपने यहाँ हो रहे कार्यक्रमों की संख्या भेजी थी, जिनका उल्लेख कार्यक्रम के बीच किया गया।

राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ : 30 अगस्त 2021

स्थापनाएँ	संकल्प	सफलता
देश में सामूहिक तरुपुत्र रोपण महायज्ञ	108	108
शान्तिकुंज स्वर्ण जयंती वनों की स्थापना।	50	180
माता भगवती की बाड़ी	1008	10,000
गमलों में स्वास्थ्य/शाक वाटिका	1008	8,000

- लगभग 300 स्थानों पर पूर्व में रोपित श्रीराम स्मृति वन-उपवनों में तरु मिलन, पूजन, सिंचन के बृहद् कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

संदेश सार-संक्षेप में

वृक्ष-वनस्पतियाँ गायत्री की ही शिक्षा देती हैं।

जो प्रेरणा गायत्री मंत्र की है, वही संदेश वृक्ष-वनस्पतियाँ भी देती हैं। वे प्रकाश को धारण कर कार्बन डाई ऑक्साइड को ऑक्सीजन में बदल देती हैं। यह अवाञ्छनीयताओं से अच्छाई की ओर ले जाने का संदेश है। उनका विकास सदा ऊर्ध्वगामी होता है। गायत्री मंत्र भी सविता के तेज को धारण करने, बुराइयों को त्याग व्यक्तित्व को निखारने और सदा उत्कृष्टता की ओर चलने के लिए प्रेरित करता है।

वर्तमान पर्यावरण संकट की विभीषिका

आज का राष्ट्रीय तरुपुत्र-तरुमित्र महायज्ञ बड़ा विलक्षण और ऐतिहासिक है। आज परिस्थितियों में ऐसे प्रयासों की आवश्यकता बहुत अधिक हो जाती है। आज मानवीय चिन्तन पर अजीब तरह का उन्माद हावी होता जा रहा है। यह चिन्तन धरती, जल, वायु सबको दूषित करता जा रहा है। प्रदूषण मानवता के लिए सबसे बड़ा 'किलर' बन गया है। 8 वर्ष के बच्चे के फेंफड़े भी ऐसे हो गए हैं जैसे लगातार 20 वर्षों तक सिगरेट पीने वाले व्यक्ति के हुआ करते थे। प्रदूषण के कारण 30% भूमि ऊसर हो गई हैं। आसमान से हो रही अम्ल की वर्षा के कारण इमारतों की उम्र घट कर एक तिहाई रह गई है। **- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी**

गायत्री परिवार का वृक्षारोपण अभियान आज की परम आवश्यकता है।

इन दिनों हो रहे मौसम परिवर्तन, धूम्र उत्सर्जन और पर्यावरण की गुणवत्ता में हो रही निरन्तर गिरावट को देखते हुए गायत्री परिवार का यह राष्ट्रीय वृक्षारोपण अभियान आज की परम आवश्यकता है। जब धार्मिक आधार पर वनीकरण के प्रयास किए जाते हैं तो निश्चित ही लोग इससे जुड़ते हैं।

डॉ. पी.सी. दुबे ने कृषि क्षेत्र में वानिकी को बढ़ावा देने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि मिट्टी में घटती कार्बन की मात्रा धरती के ऊसर होने का कारण है। वृक्षारोपण से ही हम मिट्टी में कार्बन की मात्रा बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि अपने अभियान में यदि हम शासन की योजनाओं का समावेश करें तो यह अभियान और प्रभावी हो सकता है।

- डॉ. प्रवीण चंद्र दुबे, प्रधान वन संरक्षक म.प्र. (से. नि.)

भगवान श्री कृष्ण के गुण और आदर्शों को अपनाने का पर्व है जन्माष्टमी

-श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

शान्तिकुञ्ज में मनाए गए जन्माष्टमी पर्व की मनोरम झाँकी

सदुद्देश्य के लिए जनमानस संगठित हो जाए तो ईश्वरीय चेतना असंभव को भी संभव कर देती है। भगवान श्रीकृष्ण के अवतरण का यही संदेश था। उन्होंने अपनी बाल लीलाओं से ही लोगों में नया साहस जगाकर अनीति से लोहा लिया और वृक्षासुर, बकासुर,अघासुर को ही नहीं मारा, बल्कि कंस व जरासंघ जैसे आक्रान्ताओं का भी वध कर दिया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के करोड़ों श्रद्धालुओं को श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने यह संदेश शान्तिकुञ्ज में मनाए गए जन्माष्टमी पर्व समारोह के अवसर पर दिया। यह पर्व परम्परानुसार जन्माष्टमी (30 अगस्त) की सायंकालीन सभा में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। भगवान श्रीकृष्ण की आकर्षक झाँकी सजी। श्री श्यामबिहारी दुबे की टोली ने हृदयस्पर्शी संचालन करते हुए योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन-दर्शन की व्याख्या की। शान्तिकुञ्ज के युगगायकों की युगनिर्माणी उल्लास से ओतप्रोत प्रस्तुतियों ने उपस्थित तथा ऑनलाइन जुड़े परिजनों को भक्तिभाव से सराबोर कर दिया।

कर्मयोग का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण कर्मयोग का संदेश देने आए थे। उनका कथन था- ''असंग के शस्त्र से दृढ़तापूर्वक वासना, तृष्णा, अहंता की जड़ों को काट दो।'' अर्थात् असुरता के नाश एवं देवत्व के अभिवर्धन के लिए अपने मन पर विजय प्राप्त करो। मन को अपना मित्र बनाओ। मन में उठती दुर्भावनाओं और हीन वृत्तियों के साथ पूरी तरह असहयोग करते हुए श्रेष्ठता की ओर बढ़ो।

जीवन-शास्त्र है गीता

गीता से बड़ा कोई जीवन शास्त्र नहीं, कोई कर्मयोग का विधान नहीं। किसी भी स्थिति में अपने को ऐसे कर्मों से मत जोड़ो जिनमें आत्मा का पतन होता हो।

गोशाला बनाएँ, वनौषधि वाटिकाएँ लगाएँ

आज अनेक स्थानों पर शान्तिकुञ्ज स्मृति उपवनों की स्थापना हो रही है। जहाँ स्मृति उपवन बनाए जायें वहाँ गोशालाओं की स्थापना भी हो और वनौषधि वाटिकाएँ लगाई जायें।

-श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

श्रद्धेया जीजी ने श्री जे.पी. नड्डा और माननीय मुख्यमंत्री जी को राखी बाँधी

श्रद्धेया जीजी मान. नड्डा जी को राखी बाँते हुए एवं डॉ. साहब मुख्यमंत्री जी को प्रतीक भेंट करते हुए

शान्तिकुञ्ज युग के नवनिर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित लाखों युग सृजेताओं का अपना घर है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा भी अपने को युगऋषि का समर्पित स्वयंसेवक मानते हैं और जब भी उत्तराखण्ड आते हैं, पारिवारिक भाव के साथ शान्तिकुञ्ज आना नहीं भूलते।

उत्तराखण्ड के दो दिवसीय प्रवास पर आए श्री जगत प्रसाद नड्डा रक्षाबन्धन की पूर्व संध्या पर शान्तिकुञ्ज आए। श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के साथ उनकी वार्ता हुई। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री मदन कौशिक भी साथ थे। श्रद्धेया जीजी ने तीनों को राखी बाँधते हुए उनके यशस्वी जीवन एवं प्रदेश, देश और सारे विश्व के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

आरम्भ में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने गायत्री मंत्र लिखित चादर ओढ़ाकर अतिथियों का स्वागत किया। देश-प्रदेश के सामाजिक, सांस्कृतिक विकास की योजनाओं पर विचार-विमर्श भी हुआ। शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा जारी किए गए डाक टिकट का स्मृति चिह्न एवं युग साहित्य भेंट कर अतिथियों को भावभरी विदाई दी गई। शान्तिकुञ्ज पहुँचने पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा जी सहित कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने उनकी अगुवानी की।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.09.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

75वें स्वतंत्रता दिवस पर देश को युग निर्माणियों की श्रद्धाञ्जलि

अमृत महोत्सव का शानदार शुभारम्भ

गायत्री परिवार के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए

वडोदरा। गुजरात

अखिल विश्व गायत्री परिवार, वडोदरा शहर समन्वय समिति एवं युवा प्रकोष्ठ के सहयोग से 15 अगस्त के दिन शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती एवं आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें वडोदरा शहर के विविध ब्लॉक में चल रहे बाल संस्कार केंद्रों से आए 90 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। उन्होंने देशभक्ति गीत, छोटी-छोटी नाटीकाएं, प्रज्ञागीतों, शहीदों के जीवन पर आधारित नाटिकाएं एवं नृत्यों की कुल 25 प्रस्तुतियों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का मार्मिक संदेश दिया।

श्रोताओं द्वारा इस कार्यक्रम को बहुत सराहा गया। वडोदरा शहर के वरिष्ठ महानुभावों एवं गायत्री परिवार के गणमान्यों ने उन्हें स्मृति चिह्न, तुलसी के पौधे भेंट कर सम्मानित किया। माँ गायत्री प्रज्ञा भवन, मांजलपुर ने 65 कुंवारी कन्याओं को अति उपयोगी किट्स प्रदान किये। युवा प्रकोष्ठ के जिगरभाई ठक्कर ने इस कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला एवं कोकिलाबेन परीख ने सबका आभार व्यक्त किया।

सेवाभाव का सम्मान किया

कथारा, बोकारो। झारखण्ड

कथारा, गायत्री ज्ञान मंदिर में 75वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्थानीय महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल की गरिमामयी उपस्थिति में ध्वजवंदन किया गया। गायत्री ज्ञान मंदिर की देवालय प्रबंधन की सदस्या श्रीमती पुष्पा देवी ने ध्वजवंदन किया। इस अवसर पर बोडिया बस्ती की कार्यकर्ता श्रीमती हेमिया देवी ने सियारी पंचायत के उत्क्रमित मध्य विद्यालय सियारी के प्रधानाचार्य श्री महेंद्र नायक को सेवानिवृत्त के उपलक्ष्य में शॉल देकर सम्मानित किया। बोडिया बस्ती की श्रीमती किरण देवी, जिन्होंने एक आदर्श सौतेली माँ की भूमिका निभायी है, को डॉ. दिनेश कुमार ने साड़ी देकर सम्मानित किया।

ध्वजवंदन करती महिला मण्डल की बहिनें

ज्ञातव्य हो की श्रीमती किरण देवी की जेठानी के तीन बच्चे थे। उन तीनों बच्चों के पिता की मृत्यु हो चुकी है। उनके लालन -पालन की जिम्मेदारी लेते हुए श्रीमती किरण देवी ने अपनी स्वर्गीय माँ से कहा था कि क्या मेरे बच्चे होंगे तभी माँ कहलाऊंगी?

75वें स्वतंत्रता दिवस पर श्री बी. पी अग्रवाल ने अपनी ओजस्वी वाणी से सबके दिलों में देश के प्रति प्रेम एवं भक्तिभाव जगाया। श्री रघुनंदन वर्णवाल ने राष्ट्रीय गीत गाकर सबका दिल मोह लिया। बहनों की तरफ से श्रीमती रीना सिन्हा, शीला देवी, पुष्पा वर्णवाल और कलावती देवी ने देशभक्ति गान गाकर दर्शकों को उत्साहित किया।

कार्यक्रम का संचालन गोमिया प्रखंड के समन्वयक श्री पंचदेव प्रसाद यादव ने किया। इसका समापन श्री हनुमान दयाल सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। श्री जितेन्द्र कुमार चौहान, ओमप्रकाश गुप्ता, जय प्रकाश विश्वकर्मा, बलिराम चौहान, गौरव कुमार, अर्जुन वर्णवाल, झरी वर्णवाल, नंदू विश्वकर्मा, लक्ष्मी वर्णवाल इत्यादि उपस्थित रहे।

दीपयज्ञ कर शहीदों को दी श्रद्धाञ्जलि

'युगऋषि का संदेश' पुस्तक घर-घर पहुँचाने का संकल्प

होशंगाबाद। मध्य प्रदेश

15 अगस्त की पूर्व संध्या पर गायत्री शक्तिपीठ सेठानी घाट में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में शहीदों को नमन करते हुए दीप महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री अनुराग मिश्रा ने कहा कि वर्तमान समय में हमारे देश को आजादी तो मिल गई लेकिन देश को बनाने हेतु अभी कार्य करना है।

स्वतंत्रता दिवस पर नशा मुक्ति अभियान एवं स्वास्थ आंदोलन को कार्यान्वित करने का परिजनों ने संकल्प लिया। आने वाले समय में होशंगाबाद जिले को नशा मुक्त करने हेतु गायत्री परिवार एक विशेष अभियान चलाएगा। दीपयज्ञ की देवदक्षिणा में परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य पर आधारित 'युगऋषि का संदेश' पुस्तक को घर-घर तक पहुँचाने हेतु सभी ने संकल्प भी लिया। श्री अनुराग मिश्रा के द्वारा 501 घरों में, श्री तुलसीराम बावरिया के द्वारा 101 घरों में, गायत्री परिवार ट्रस्टी हरिशंकर राय 111 घरों में एवं जिला युवा प्रकोष्ठ प्रभारी चंद्रमोहन गौर के द्वारा अनेक घरों में युग ऋषि का संदेश पहुंचाया जाएगा। दीप महायज्ञ में गायत्री परिवार के सभी वरिष्ठ एवं युवा परिजन उपस्थित हुए।

जिले में अनेक स्थानों पर ध्वजारोहण समारोह

गायत्री ज्ञान मंदिर, भालुबासा में ध्वजारोहण

जमशेदपुर। झारखण्ड

टाटानगर के परिजनों ने गायत्री ज्ञान मंदिर, भालुबासा में देश के 75वें ध्वजवंदन का कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर सम्मानित अतिथि पूर्वी सिंहभूम जिले की महिला प्रभारी बहन श्रीमती मंजू मोदी, समाज सेवी श्री वीरेंद्र नाथ पांडे एवं धनबाद युवा प्रकोष्ठ के श्री वीरेंद्र कुमार साव थे। कार्यक्रम में टुईलाडूंगरी, भूईयाडिह एवं सीतारामडेरा, बाल संस्कार शाला के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। प्रज्ञा महिला मंडल की बहनों द्वारा गायत्री मंदिर-मून सिटी, भाटिया बस्ती कदमा, गायत्री चेतना विस्तार केन्द्र गोविंदपुर, गायत्री ज्ञान मंदिर, शंकरदा के साथ-साथ साहित्य विस्तार केंद्र-बारीडीह, गायत्री मंदिर आदित्यपुर, गायत्री चेतना केंद्र-बेक्को, गायत्री प्रज्ञापीठ, आदित्यपुर में भी परिजनों द्वारा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया ।

118 पौधे रोपे

गुरुग्राम-गुडगांव-हरियाणा

गायत्री परिवार गुरुग्राम के परिजनों के द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में सेक्टर-65 के 220 के. वी. पावर स्टेशन में 118 पौधों का रोपण किया गया। पावर स्टेशन के अधिकारियों के विशेष आग्रह पर शांतिकुञ्ज से लाया गया चंदन तरु का भी सम्मानपूर्वक रोपण हुआ।

बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुति 'एक शाम देश के नाम'

उज्जैन। मध्यप्रदेश

स्वतंत्रता दिवस के अमृत महोत्सव पर गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन के उपजोन समन्वयक श्री राजेश पटेल ने ध्वजारोहण कर परिजनों से राष्ट्र निर्माण में अपने दायित्वों को समझने और निर्वहन करने का अनुरोध किया। राजीव नगर बाल संस्कार शाला पर श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया, बच्चों ने आकर्षक प्रस्तुतियां दी।

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के शुभारंभ 15 अगस्त के दिन '**एक शाम देश के नाम**' सांस्कृतिक संध्या का आनलाइन आयोजन किया गया। इसमें 20 बच्चों ने भागीदारी कर मनोहारी प्रस्तुतियाँ दीं। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री राजेश पटेल उपजोन समन्वयक ने गायत्री शक्तिपीठ पर दीप प्रज्जवलित कर किया। इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती आशु नागर, श्रीमती रीता शर्मा ने किया।

अंजड। मध्य प्रदेश

स्वतंत्रता दिवस पर डॉ. एल. एन. वडनेरे ने भारत माता का पूजन कर ध्वजारोहण किया। श्री जगदीश जी, श्री महेंद्र भावसार, रिटा. डिप्टी कलेक्टर शोभाराम पाटीदार ने राष्ट्रधर्म पर अपने विचार रखे।

स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर गायत्री शक्तिपीठ अंजड के प्रज्ञा हाल में स्थानीय कलाकारों द्वारा देश भक्ति से ओत प्रोत गीतों की रंगारंग प्रस्तुतियाँ दीं।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन, गुरुपूजन, गायत्री माता पूजन, भारत माता चित्र पर माल्यार्पण, प्रमुख ट्रस्टी डॉ. एल. एन.वडनेर, संगीतज्ञ श्री शांतिलाल फोंगला, मांगीलाल जिराती, प्रांतीय प्रतिनिधि श्री महेंद्र भावसार एवं जिला समन्वयक श्री माधव भाई द्वारा सम्पन्न हुआ।

नन्हे मुन्ने बच्चों द्वारा रोचक प्रस्तुतियों ने समा बांध दिया। कार्यक्रम का संचालन प्रभारी श्री अनिल भावसार ने किया। पूजन संस्कार श्री राजू भारद्वाज जी ने करवाया।

रक्षाबन्धन पर्व पर दिव्यचक्षु बालिकाओं के संग बाँटी संवेदनाएँ

प्यार, प्रेरणा और प्रोत्साहन से ज़रूरतमंदों में नया आत्मविश्वास जगाते 'दिया' मुम्बई के युवा

दादर, मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया, मुम्बई की टीम 20 अगस्त को दिव्यचक्षु बालिकाओं के विद्यालय दादर के श्रीमती कमला मेहता स्कूल में पहुँची। शुचिता शेट्टी, कृष्णा महाजन, डॉ. सोनाली पाटिल, डॉ. गरिमा की टीम ने बालिकाओं और उनके परिवारी जनों पर प्यार, आत्मीयता, करुणा और ममता की वर्षा करते हुए रक्षाबन्धन पर्व मनाया। परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य के साथ जुड़कर जीवन में सफलता के शिखर तक पहुँचने की प्रेरणाएँ दीं।

दिया, मुम्बई ने दिव्यचक्षु बालिकाओं को पढ़ाई के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान की। उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले अनाज, आटा, मसाले, फल, सब्ज़ियाँ, तेल, बिस्किट आदि प्रदान किये। श्री साहेबराव महाले जी द्वारा ब्रेल लिपि में प्रकाशित युगऋषि का साहित्य भेंट किया। सभी प्रतिभागियों और परिजनों को भी साहित्य भेंट किया गया।

कार्यक्रम संक्षिप्त समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। प्राचार्य सुश्री वर्षा जाधव की मुख्य उपस्थिति में दिया सदस्यों ने बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ दीपयज्ञ किया। इस अवसर पर बालिकाओं ने कलेक्टर, संगीतकार, व्यवसायी, शिक्षक बनने के अपने सपने भी सुनाए। सभी बालिकाओं ने नियमित गायत्री उपासना करने और सूर्य अर्घ्य देने का संकल्प लिया।

ऋतंभरा प्रज्ञा मण्डल, अंधेरी

ऋतंभरा प्रज्ञा मण्डल, अंधेरी प्रत्येक पूर्णिमा और अमावस्या के दिन समाज के ग़रीब लोगों के बीच जाकर उन्हें स्वास्थ्यवर्धक भोजन प्रदान करता है। रक्षाबन्धन के उपलक्ष्य में चत्राली सोनटाके, निधि यादव, संगीता तिवारी, रोहित यादव स्नेह सदन आश्रम (अनाथालय) पहुँची। वहाँ 108 बच्चों को भोजन कराया और प्यार-संवेदनाओं से युक्त सत्प्रेरणओं के साथ राखी बाँधी, रक्षाबंधन पर्व मनाया। सभी को युग साहित्य भेंट किया गया।

राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ-30 अगस्त 2021

देश के हर क्षेत्र में वृक्षारोपण के विशाल कार्यक्रम आयोजित हुए

108 वृक्ष रोपे
खातेगाँव, देवास। मध्य प्रदेश
गायत्री परिवार खातेगाँव ने राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ में भाग लेते हुए दिनांक 30 अगस्त, जन्माष्टमी पर्व पर 108 वृक्षों का रोपण किया।

400 पौध लगाई
रायसेन। मध्य प्रदेश
ग्राम अमरावती में गायत्री प्रज्ञा मण्डल द्वारा बृहद् स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। उन्होंने कुल 400 वृक्षों की पौध लगाई।

पार्क में रोपे 108 पौधे
रतलाम। मध्य प्रदेश
रतलाम शाखा द्वारा स्थानीय पर्यावरण पार्क में वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला पुलिस अधीक्षक गौरव तिवारी कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर पार्क में 108 पौधे रोपे गए।

होशंगाबाद। मध्य प्रदेश
राष्ट्रीय तरूपुत्र रोपण महायज्ञ के अंतर्गत गायत्री शक्तिपीठ होशंगाबाद द्वारा शासकीय ज्ञानोदय आवसीय विद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यालय प्राचार्य श्री हरिगोविंद दुबे, अधीक्षक श्री एस.सी. चैरे सहित गणमान्यों ने शान्तिकुञ्ज से प्रसारित राष्ट्रीय कार्यक्रम से जूम ऐप के माध्यम से जुड़कर सारे कार्यक्रम सम्पन्न किए। तत्पश्चात् विद्यालय परिसर में 101 वृक्षों की पौध लगाई गई। छात्र-छात्राओं को तरुमित्र बनकर वृक्षों के संरक्षण की जिम्मेदारी का संकल्प कराया गया। गायत्री शक्ति पीठ की ओर से बच्चों को गायत्री चालीसा एवं वृक्षों के महत्व के पत्रक भेंट किये गये ।

वृक्षगंगा काँवड़ यात्राएँ निकालीं
सुलतानपुर। उत्तरप्रदेश
राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण कार्यक्रम के अंतर्गत सुलतानपुर के कार्यकर्त्ताओं द्वारा जिला समन्वयक डॉ. सुधाकर सिंह के अगुवाई में शानदार भागीदारी की गई। वृक्षारोपण से पूर्व अलग-अलग स्थानों पर वृक्षगंगा कावड़ यात्राएँ निकालकर लोगों को इस पुनीत कार्य में भागीदारी के लिए प्रेरित किया गया। उस दिन वृक्षों की कई पौध लगाई गईं। उल्लेखनीय है कि सुलतानपुर शाखा द्वारा गुरुपूर्णिमा पर्व से अब तक 800 से अधिक पौधों का रोपण किया जा चुका है।

तुलसी-गिलोय वितरण
ब्यावरा। मध्य प्रदेश
गायत्री परिवार ब्यावरा द्वारा नगर के पीपल चौराहे पर तुलसी एवं गिलोय के 200 से अधिक पौधों का वितरण किया गया। परिजनों को उनके औषधीय गुणों की जानकारी भी दी गई।

अखण्ड परमधाम आश्रम भोपाल बायपास चौराहे से उत्कृष्ट विद्यालय मुल्तानपुरा तक तृतीय चरण का वृक्षारोपण किया गया। इसके अन्तर्गत नीम, आम के पौधे रोपे गए। पूर्व में रोपित पौधों के साथ तरुमिलन, तरुसिंचन का कार्यक्रम आह्लादकारी था।

पूरनपुर, पीलीभीत। उत्तर प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ गन्ना समिति पूरनपुर द्वारा श्री दिनेश गुप्ता के नेतृत्व में वृक्षारोपण किया गया। परिजनों ने गन्ना समिति परिसर में नीम, पाकड़, पीपल, आम, बरगद तथा केले के पौधे रोपे। सभी से अधिक से अधिक वृक्ष लगाने तथा उनका पोषण करने का संकल्प कराया गया।

देहरादून। उत्तराखण्ड
देहरादून में कार्यकर्त्ताओं ने बड़े उत्साह के साथ शांति कुंज स्वर्ण जयन्ती तरुपुत्र रोपण महायज्ञ में भाग लिया। वृक्षारोपण का कार्यक्रम यज्ञीय विधि-विधान के साथ सम्पन्न हुआ।

मेडिकल कॉलेज में वृक्षारोपण
भुबनेशवर। ओडिशा
हाईटेक मेडिकल कॉलेज, भुबनेश्वर में राष्ट्रीय तरुपुत्र रोपण महायज्ञ के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण का विशेष कार्यक्रम अखिल विश्व गायत्री परिवार ओडिशा द्वारा आयोजित किया गया था।

विद्यालय में
बगोदर, गिरिडीह। झारखण्ड
कृष्ण जन्माष्टमी के दिन बगोदर के नेहरू पब्लिक स्कूल में बच्चों एवं शिक्षकों ने अपने विद्यालय परिसर में आम, अमरूद, अशोक, आंवला, शमी आदि के पौधे लगाए और उन्हें रक्षासूत्र बांधकर उनकी रक्षा करने का वचन दिया।

खातेगाँव, देवास

बाराँ, राजस्थान

बगोदर, गिरिडीह

टीकमगढ़, म.प्र.

जबलपुर, म.प्र.

ब्यावरा, म.प्र.

सुलतानपुर, उ.प्र.

देश के स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव का शुभारम्भ वृक्षारोपण के साथ

मुम्बई। महाराष्ट्र
गायत्री परिवार मुम्बई के कार्यकर्ताओं के द्वारा स्वतंत्रता दिवस के शुभ पर्व पर भिवण्डी रोड पर आर.पी.एफ. जवानों के साथ मिलकर सामूहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न किया गया।

अहमदाबाद। गुजरात
गायत्री परिवार यूथ ग्रुप द्वारा अहमदाबाद के रामदेव पीर गौशाला, जशपुर ग्राम में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में अपना नियमित वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न किया। यह उनके रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान का 164वाँ सप्ताह था। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में दीपयज्ञ का भी आयोजन किया गया, जिसके माध्यम से ग्रामवासियों को नवसृजन अभियान के साथ जुड़ने की प्रेरणा दी गई।

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिया, दिल्ली ने अपने प्रेरणाप्रद साप्ताहिक रविवासरीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत 15 अगस्त को सैकड़ों युवाओं में राष्ट्रप्रेम की भावनाओं का संचार किया। दिया समन्वयक श्री मनीष कुमार ने अपने उद्बोधन में स्वतंत्रता सेनानियों की देशभक्ति के अनेक संस्मरण और उनके त्याग-बलिदान की गाथा सुनाई। परम पूज्य गुरुदेव की नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक क्रान्ति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इनके बिना स्वतंत्रता अभी अधूरी है। हमें स्वतंत्रता सेनानियों की तरह ही उत्साह और समर्पणभाव के साथ राष्ट्र के सांस्कृतिक उत्थान में अपना योगदान देना है। दिया, दिल्ली ने 15 अगस्त को 122 पौध भी रोपीं।

जबलपुर। मध्य प्रदेश
गायत्री परिवार एवं आरोग्य भारती के संयुक्त तत्वावधान में डुमना एयरपोर्ट परिसर में 101 वृक्षों का रोपण कार्यक्रम विमानतल निदेशक श्रीमती कुसुमदास जी के नेतृत्व में संपन्न हुआ। तरुपूजन श्री प्रकाश मूरजानी जी ने कराया। पूरा कार्यक्रम राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत रहा।

मुलताई । बैतुल। मध्यप्रदेश
गायत्री परिवार मंगोना कला के भाई-बहिनों द्वारा 75 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मातृभूमि की रक्षा में शहीद हुए वीर शहीदों की याद में 31 वृक्ष आम, अनार, पीपल, नीम और आंवले की पौध का रोपण किया गया तथा उनके संरक्षण-पोषण का संकल्प दिलाया गया। गायत्री परिवार के योगेश सराटकर, नरेंद्र बोडखे, सुभाष मस्की, प्रयागराव झरबडे, श्रीमती शांता गवाड़े, कमला बारसकर, गुणता बोडखे, आजीविका महिला समूह कि सविता मस्की, सरपंच धनराज कुमरे, सचिव कैलाश दाते, हितेश झरबडे, देवेंद्र झरबड़े एवं ग्राम के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

ऑनलाइन बाल संस्कार शाला के बच्चों के संस्कारों को सराहा

सरगुजा। छत्तीसगढ़
ऑनलाइन बाल संस्कार शाला सरगुजा संभाग द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। लोगों ने इन कार्यक्रमों को बहुत पसंद किया तथा उनकी देशभक्ति व सामाजिक संवेदनाओं को सराहा। विशिष्ट अतिथि नुजहत फातीमा (नीलू खान) नगर निगम पार्षद अम्बिकापुर तथा श्री रामप्रसाद गुप्ता, सरस्वती शिशु मंदिर प्राचार्य ने कहा कि बच्चों में संस्कार संवर्धन के यह प्रयास आज के समय में हमारे समाज के लिए यह बहुत अच्छी पहल है। उन्होंने प्रत्येक माता-पिता से इस प्रकार की कक्षाओं में अपने बच्चों को भेजने का आह्वान किया।

ईको फ्रैण्डली हो गणेश उत्सव

मण्डला। मध्य प्रदेश
प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी और जहरीले रासायनिक रंगों से रंगी गणेश एवं अन्य देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ जल एवं पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं। मण्डला शाखा ने इस संदर्भ में जनजागरूकता अभियान अगस्त माह से ही आरंभ कर दिया, ताकि नगर में गणेश उत्सव में अधिक से अधिक ईको फ्रेंडली गणेश प्रतिमाओं की ही स्थापना हो। इस अभियान में सरस्वती उच्च माध्यमिक विद्यालय मंडला के भैया-बहिनों के साथ नगर की अनेक महिलाओं का प्रशंसनीय सहयोग मिल रहा है।

पर्यावरण प्रेमी प्रशिक्षक लाला राम चक्रवर्ती द्वारा मिट्टी की बनी प्रतिमाएँ लोगों को लागत मूल्य पर भी उपलब्ध कराई जा रही हैं।

कोरोना योद्धाओं का सम्मान

पन्ना। मध्य प्रदेश
23 अगस्त को पन्ना के गायत्री मन्दिर परिसर में कोविड-19 योद्धा सम्मान समारोह आयोजित हुआ। इसमें वैश्विक आपदा के समय अपनी जान संकट में डालकर भी मानवता की सेवा में तत्पर रहे चिकित्सकों, नर्सों, पुलिसकर्मियों, समाजसेवियों, अधिकारी-कर्मचारी आदि का गायत्री परिवार द्वारा सम्मान किया गया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री प्रभाकान्त तिवारी, श्री बसंत सोलंकी एवं श्री मोतीलाल शर्मा ने उन्हें प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर सर्वश्री एल.डी. सिंह, शिवनारायण पाण्डेय, मनोज केसरवानी आदि गायत्री परिवार के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने उपस्थित होकर सम्मानित महानुभावों का उत्साहवर्धन किया।